04 - विश्व पर्यावरण दिवस के मकसद को मप्र में सार्थक...

05 - पर्यावरणीय न्याय की वैश्विक पहल जरूरी

06- बैतूल-हरदा-हरसूद लोस से भाजपा के डीडी उईके ने अपना ही रिकॉर्ड तोड़ा

07- धार-महू लोकसभा सीट से भाजपा की सावित्री ठाकुर ने...

A Daily News Magazine

इंदौर

बुधवार, 5 जून, 2024

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 228, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

जनादेश को प्रणाम.....

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के सबसे बड़े चुनाव में जनता ने एक बार फिर चौंका दिया। आए जनादेश ने सारे अनुमानों को ध्वस्त कर दिया। जनादेश बताता है कि गठबंधन की अहमियत का दौर 10 साल बाद फिर लौट आया है।

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

प्रचार

व्यापार का होता है
जिससे अधिक उत्पाद बेच कर
मुनाफा कमाया जा सके
कई बार घटिया उत्पाद भी
प्रचार के दम पर
अधिक बिक जाते हैं
प्रचार
सत्ता के लिए होता है
जनता को लुभाने के लिए
उम्मीदवार की मोहक छवि
निर्मित की जाती है
कई बार बहुत बौने उम्मीदवार भी छवि निर्माण से
ऊँचे पूरे देवपुरूष-से दिखने लगते हैं
फूलों की सुगंध को प्रचार की जरूरत नहीं होती
वे स्वयमेव फैलती हैं
फूल खिलते हैं
सुगंध फैलती है
उसी समय।

- चंद्रशेखर साकल्ले

एनडीए को बहुमत

...लेकिन बीजेपी पिछड़ी

- सहयोगी रहेंगे हावी, सत्ता की चाबी नीतिश और नायडू के पास रहेगी
- जातिगत जनगणना और मुस्लिम आरक्षण का दबाव बनाएंगे सहयोगी
- अब धरा रह जाएगा बीजेपी का कोर एजेंडा, यूपी में सबसे बड़ा झटका

नई दिल्ली (एजेंसी)। देर शाम तक क के नतीजों के मुताबिक नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में लगातार तीसरी बार एनडीए की सरकार बन रही है, लेकिन इस बार सत्ता की चाबी एनडीए के दो बड़े पार्टनर नीतिश कुमार और चंद्रबाबू नायडू के हाथों में रहेगी। ऐसे में बीजेपी को अपने कोर एजेंडे को आगे ले जाने में धक्का लग सकता है। ट्रेंड के मुताबिक बीजेपी 244 सीटों पर आगे चल रही है। टीडीपी 16 और जदयू 14 सीटों पर आगे हैं। बहुमत के लिए 272 सीटों की जरूरत होगी। इस बेस पर इन पार्टियों के पावर का डिस्ट्रीब्यूशन करें, तो 89 फीसदी पावर बीजेपी के पास और 5.5-5.5 प्रतिशत जदयू और टीडीपी के पास है। देखने में 5.5 फीसदी का पावर मीटर भले छोटा हो, लेकिन सरकार गिराने के लिए काफी है। हमने बहुमत के आंकड़े यानी 272 को 100 फीसदी मानते हुए पावर मीटर निकाला है। लोकसभा चुनाव प्रचार के दौरान, नीतिश कुमार ने रैलियों में कहा कि उन्होंने अपने शासनकाल में सांप्रदायिक सद्भाव बरकरार रखा। अल्पसंख्यकों के लिए कई महत्वपूर्ण योजनाएं चलाईं। भाजपा के साथ होने के बावजूद नीतिश कुमार ने अल्पसंख्यक समुदाय को यह संदेश दिया है कि वह भाजपा के साथ गठबंधन के बावजूद उनके हितों की रक्षा करना जारी रखेंगे। भाजपा में शामिल होने से पहले नीतिश ने आरक्षण पर बहस छेड़ दी थी और बिहार में जाति आधारित सर्वेक्षण भी करवाया था। जेडीयू जाति जनगणना के पक्ष में है।

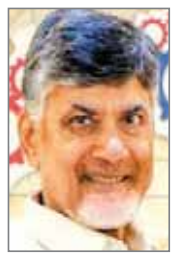

NDA	INDIA	OTH
293	234	16

संविधान बचा लिया, नरेंद्र मोदी की यह नैतिक हार

नतीजों के बाद संविधान दिखाकर बरसे राहुल गांधी

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव 2024 के नतीजों के बाद कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी और सोनिया गांधी सामने आए हैं। कांग्रेस मुख्यालय पहुंचे राहुल गांधी ने कहा कि हम यह लड़ाई सिर्फ मोदी से नहीं थी बल्कि संस्थाओं से भी थी। उन्होंने कहा कि मेरे दिमाग में पहले से ही था कि हिन्दुस्तान की जनता अपने संविधान के लिए खड़ी होगी। इन लोगों ने जब हमारे खाते सीज किए और मुख्यमंत्रियों को जेल में डाला तो हमें यह यकीन हो गया था। इस प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान उनके साथ सोनिया गांधी और प्रियंका गांधी भी थीं। राहुल गांधी ने कहा कि गठबंधन जहां भी लड़ा, वहां एकता के साथ मुकाबला हुआ।

म.प्र. में भाजपा ने खिलाए पूरे 29 कमल

विदिशा से शिवराज 8 लाख से ज्यादा वोटों से जीते

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में भाजपा क्लीन स्वीप किया। पूरे की पूरे 29 कमल खिलाए। वहीं हाईप्रोफाइल लोकसभा सीटों में से विदिशा, गुना-शिवपुरी, छिंदवाड़ा और राजगढ़ में चुनावी नतीजे पूरी तरह बीजेपी के पक्ष में आ रहे हैं। विदिशा में पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कांग्रेस के प्रताप भानु शर्मा को 8 लाख 20 हजार 868 वोटों से हरा दिया है। वहीं भोपाल में आलोक शर्मा विजयश्री हुए।

गुना-शिवपुरी सीट पर केंद्रीय मंत्री व बीजेपी कैंडिडेट ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कांग्रेस प्रत्याशी राव यादवेंद्र सिंह यादव को 5 लाख 40 हजार 929 वोटों से शिकस्त दी है। उनके समर्थक दोपहर में ही जीत की बधाई देते हुए बैनर लगा चुके थे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी सिंधिया को एक्स पर बधाई दी है। वहीं, छिंदवाड़ा में कांग्रेस का किला ढह गया है। यहां बीजेपी के विवेक बंटी साहू ने कांग्रेस प्रत्याशी नकुलनाथ को एक लाख 13 हजार 618 वोटों से मात दी है। नकुलनाथ शुरुआती रुझानों के बाद दोपहर करीब 12 बजे ही मतगणना स्थल छोड़कर घर पहुंच गए थे। शिकारपुर स्थित कमलनाथ के बंगले पर सन्नाटा पसरा है।

दिग्विजय सिंह हारे- उधर, राजगढ़ में कांग्रेस प्रत्याशी और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह भी बीजेपी के रोड़मल नागर से पीछे चल रहे थे और वे हार की कगार पर थे।

त्वरित टिप्पणी

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

भाजपा की जीत की राह में कहां रोड़े अटके !

लोकसभा चुनाव के नतीजों ने भाजपा को सबक दिया कि अति आत्मविश्वास किसी के लिए भी घातक होता है। देश को दस साल पहले 'कांग्रेस मुक्त भारत' का नारा देने वाले नरेंद्र मोदी अपनी पार्टी को पूर्ण बहुमत भी नहीं दिला सके। उनके 'मोदी की गारंटी' का नारा भी चुनाव में बेअसर रहा। भाजपा को इन चुनाव ने यह भी सिखाया कि पार्टी के अंदर भी लोकतंत्र होना जरूरी है। अभी तक सिर्फ दो नेता पार्टी के फैसले करते रहे हैं, लेकिन इन चुनाव के नतीजों के बाद शायद उनका रवैया बदले!

लोकसभा चुनाव के नतीजे आ गए। ये नतीजे भाजपा के दावों और एग्जिट पोल के अनुमानों के विपरीत कहे जाएंगे। भाजपा ने इस बार 400 पार का नारा दिया था। लेकिन, यह नारा भाजपा को स्पष्ट बहुमत से पहले ही अटक गया। भाजपा ढाई सौ तक भी नहीं पहुंच पाई। पिछली बार भाजपा ने अकेले ही 303 सीटें जीती थी, इस बार वह उससे बहुत पीछे रुक गई। केंद्र में तीसरी बार एनडीए सरकार जरूर बनने के आसार हैं, पर भाजपा उसमें अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने में पिछड़ गई। सबसे ज्यादा नुकसान उसे उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में हुआ। पहले के अनुमानों में महाराष्ट्र में भाजपा को नुकसान बताया गया था, पर उत्तर प्रदेश के नतीजे चौंकाने वाले ही कहे जाएंगे। अब ये हार किसकी है नरेंद्र मोदी की या योगी की, इस पर भाजपा में घमासान होना है। महाराष्ट्र में तो जनता ने अपना फैसला दे दिया कि असली शिवसेना उद्धव ठाकरे की और असली एनसीपी वही है जिसके नेता शरद पवार हैं। इन दोनों क्षेत्रीय पार्टियों को तोड़कर भाजपा ने वहां शिवसेना के शिंदे गुट की सरकार बनवा दी थी। इस फैसले को महाराष्ट्र जनता ने नकार दिया।

देशभर के मतदाताओं ने इंडिया गठबंधन को 225 से ज्यादा सीट जिताकर एग्जिट पोल के अनुमानों को गलत साबित कर दिया। यह आंकड़ा इसलिए महत्वपूर्ण है कि मतदान के अंतिम चरण के ख़त्म होते ही सारे न्यूज़ चैनलों ने एक तरफ़ा एनडीए को 370 से ज्यादा सीटों पर जीतने का दावा किया था। एक बारगी लगा भी, कि क्या वास्तव में ऐसा होगा! क्योंकि, जमीनी हकीकत इसका इशारा नहीं कर रही थी। एग्जिट पोल के अनुमानों का आधार वोट देकर निकलने वाले मतदाता होते हैं। उनसे जो फीडबैक मिला, उसे न्यूज़ चैनलों ने सही मान लिया। जबकि, सच्चाई यह है कि लोग अपने परिवार में भी नहीं बताते कि उन्होंने किसे वोट दिया, तो वे न्यूज़ चैनलों को क्यों बताएंगे! यही वजह है कि एक बार फिर एग्जिट पोल की पोल खुल गई। उन्होंने तीन दिन तक जो हवा बनाई, उस गुब्बारे को फटने में देर नहीं लगी।

इस बार का चुनाव कई बातों के लिए एक सबक भी माना जाएगा। पहला सबक तो यह कि अति आत्मविश्वास किसी भी पार्टी के लिए आत्मघाती साबित होता है, जो भाजपा के मामले में सामने आ गया। भाजपा ने अपने चुनाव प्रचार में 'मोदी की गारंटी' को ज्यादा ही प्रचारित किया। भाजपा के नेता समझ नहीं पाए कि उनकी इस बात का जनता पर क्या असर हो रहा है। जनता ने इस गारंटी को गंभीरता से नहीं लिया। याद किया जाए तो अटल बिहारी वाजपेयी के दौर में चुनाव में 'इंडिया शाइनिंग' नारा दिया गया था, जिसे जनता ने नहीं स्वीकारा था। वही हश्र 'मोदी की गारंटी' का हुआ। आज का मतदाता इतना नासमझ नहीं है कि उसे नारों और जुमलों की बाजीगरी में भरमाया जा सके।

दूसरा सबक एग्जिट पोल को लेकर है। नतीजों को लेकर न्यूज़ चैनलों के अनुमान पूरी तरह प्रायोजित दिखाई दिए। कहीं से नहीं लगा कि इनमें कुछ सच्चाई है। जिस तरह से इंडिया गठबंधन को मुकाबले से बाहर समझा और समझाया गया, वह किसी के गले नहीं उतरा। उसकी वास्तविकता भी सामने आ गई। जनता के मन में क्या था और क्या दिखाया गया, यह नतीजों ने दिखा दिया। यह पहली बार नहीं है, जब इस तरीके से एग्जिट पोल की असफलता सामने आई। ऐसे अनुमान पहले भी कई बार ध्वस्त हो चुके हैं। अब ये न्यूज़ चैनलों के लिए आत्मचिंतन का विषय है, कि वे सत्ता से प्रभावित होकर चुनाव के दौर में अपना अनुमान न लगाएं। क्योंकि, ऐसे अनुमान ज्यादा दिन छुपते नहीं और बहुत जल्द सामने आ जाते हैं।

अब सरकार तो एनडीए की ही बनेगी या नहीं, अभी इस बात का दावा नहीं किया जा सकता। क्योंकि, संख्यात्मक रूप से एनडीए के पास स्पष्ट बहुमत जरूर है, पर जोड़तोड़ की संभावना अभी जिंदा है। इंडिया गठबंधन विपक्ष में बैठा तो कई सालों बाद संसद में विपक्ष ताकतवर होगा। इतना कि वह मोदी की तीसरी बार की सरकार को चैन नहीं लेने देगा। भाजपा की मोदी सरकार के सामने खतरा इस बात का भी है कि उसके पास स्पष्ट बहुमत नहीं है, इसलिए उसे उसके सहयोगी दल भी गरियाने से नहीं चूकेंगे। पिछली दो बार की सरकारों में भाजपा का रवैया यही देखने में मिलता रहा। इस बार भाजपा को कम सीटें मिली, तो उसे भी सरकार में हावी होने का दंभ छोड़ना होगा। यदि केंद्र में एनडीए की सरकार बनती है, तो आशय यह कि इस बार नरेंद्र मोदी को वास्तविक गठबंधन की सरकार चलाने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

भाजपा को स्पष्ट बहुत न मिलने का खामियाजा पार्टी के अंदर भी उठाना पड़ सकता है। इसलिए कि अभी तक भाजपा की हर जीत का श्रेय नरेंद्र मोदी और अमित शाह को दिया जाता रहा है। अब, जबकि स्थिति विपरीत है, तो उन्हें भाजपा की हार का विरोध भी सहना होगा। ऐसी स्थिति में एक बड़ा खतरा भाजपा के अंदर से दिखाई दे रहा है, जो इस बात का संकेत देता है कि भाजपा के अंदर खदबदाता लावा भी बाहर निकल सकता। क्योंकि, अभी तक कई बड़े और पुराने नेता पार्टी में अपनी बात कहने में संकोच करते थे या उनकी बात को दबा दिया जाता रहा। लेकिन, अब शायद वे खुलकर बोलेंगे। भाजपा में ऐसे कई नेता हैं जो कई बार मोदी और शाह के फैसलों से सहमत नहीं होते, पर वे विरोध करने का साहस नहीं कर पाते थे, अब देखना है कि उनका रवैया क्या होता है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 44.5 °c
न्यूनतम 36°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ बुधवार, 5 जून 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

नागौर में डंके की चोट पर जीते हनुमान बेनीवाल

● बीजेपी प्रत्याशी ज्योति मिर्धा ने लगाया हार का 'चौका'

नागौर (एजेंसी)। राजस्थान की नागौर लोकसभा सीट से राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी के उम्मीदवार हनुमान बेनीवाल ने बड़ी जीत दर्ज की है। बेनीवाल ने भाजपा प्रत्याशी ज्योति मिर्धा को 52,341 मतों से पराजित किया। पिछले चुनाव में हनुमान बेनीवाल भाजपा के समर्थित प्रत्याशी थे जबकि इस बार उन्होंने भाजपा से नेता तोड़ लिया और कांग्रेस के साथ गठबंधन किया। कांग्रेस से गठबंधन करने के बाद बेनीवाल को एक बार फिर नागौर से बड़ी जीत हासिल हुई है। हनुमान बेनीवाल लगातार दूसरी बार लोकसभा सांसद बने हैं। अब एक बार फिर लोकसभा में हनुमान बेनीवाल की दहाड़ गूंजेगी।

बाघ मूवमेंट के बीच बड़ी चिंता

भोपाल के आसपास शिकारी कुत्तों के जरिए हो रहा शिकार

भोपाल (नप्र)। भोपाल के आसपास 25 बाघों की मूवमेंट है इस बीच आसपास के क्षेत्र में वन्य प्राणियों का शिकार हो रहा है। बिशनखेड़ी और बम्होरी में 4 दिन पहले जहां ब्लैक बक का शिकार हुआ था, वहीं रविवार को शिकारियों ने शिकारी कुत्तों के माध्यम से जंगली सूअर का शिकार किया। कुछ वन्य प्राणी प्रेमियों ने शिकार करते हुए कुत्तों और उनके मालिक को अपने फोटो में कैप्चर कर लिया। इधर, श वन मंडल के अधिकारियों ने पंचनामा बनाकर सूअर का पोस्टमार्टम करके अंतिम संस्कार कर दिया। अधिकारियों का कहना है कि मामले में जांच की जा रही है।

आशंका को मिला बल- काले हिरण का शिकार कुत्तों ने किया या शिकारियों ने- बिशनखेड़ी बम्होरी इलाके में दो दिन पहले काले हिरण का शिकार किया गया था। यहां पर आए राजस्थान के चरवाहों के कुत्तों द्वारा किए गए शिकार को हादसा मानकर वहां से चरवाहों को हटा दिया गया। वन्य प्राणी प्रेमियों का कहना है कि आशंका है काले हिरण का शिकार भी कुत्तों के जरिए शिकारियों ने किया है।

वेयरहाउसिंग कॉर्पोरेशन के दैनिक वेतन पदाधिकारियों की बैठक 10जून को

कर्मचारियों के नियमितीकरण के मुद्दे पर की जाएगी चर्चा

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश वेयरहाउसिंग कॉर्पोरेशन के दैनिक वेतनभोगी पदाधिकारियों की बैठक भोपाल के 9 मसाला रेस्टोरेंट में 10 जून को आयोजित की जाएगी। दैनिक वेतन भोगी एवं श्रमिक प्रकोष्ठ के संरक्षक अनिल वाजपेयी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में कर्मचारियों के नियमितीकरण पर चर्चा की जाएगी। बैठक में संगठन पदाधिकारी राहुल जैन, मुकेश साहू, धीरेन्द्र शर्मा, पंकज मिश्रा, कपिल चौधरी, गोलू यादव (सिरोंज) सहित दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी भी शामिल होंगे।

मोदी का दबदबा तो दिखा लेकिन... कमजोर रही जीत

भारत में लोकसभा चुनाव के नतीजों पर बोला विदेशी मीडिया

इस्लामाबाद (एजेंसी)। भारत में हुए लोकसभा चुनाव 2024 के नतीजे काफी हद तक साफ हो गए हैं। भाजपा और सहयोगी दल बहुमत के 272 के आंकड़े को पार कर गए हैं। अंतरराष्ट्रीय मीडिया भी भारतीय चुनाव पर रिपोर्ट कर रहा है। दुनिया के कई देशों के मीडिया ने चुनाव नतीजों पर कमेंट किया है। बीबीसी न्यूज ने कहा है कि नतीजों में मोदी की बड़ी चुनावी जीत की उम्मीदें धूमिल हुई हैं। यूके से स्काईन्यूज ने कहा कि बीजेपी का प्रदर्शन उम्मीद के मुताबिक नहीं रहा है। दूसरे देशों से भी चुनाव नतीजों पर प्रतिक्रियाएं आ रही हैं। सीएनएन ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि दुनिया की सबसे बड़ी डेमोक्रेसी में सत्ताधारी भाजपा की निगाहें तीसरी बार सरकार बनाने पर है।

अखबार कहता है कि विवादों के बावजूद नरेंद्र मोदी भारत के लोकप्रिय नेता हैं। पाकिस्तान के अखबार डॉन ने लिखा है कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाले गठबंधन को स्पष्ट बहुमत लेकिन विपक्षी दलों का भी शानदार प्रदर्शन। बीबीसी इंग्लिश ने कहा है कि भारत में चुनाव नतीजों में भाजपा की बड़ी जीत की उम्मीदों को झटका। निक्की एशिया कहता है कि नरेंद्र मोदी बहुमत की ओर, विपक्षी दलों का गठबंधन पिछड़ा।

एनडीए की लगातार तीसरी बार सरकार बनना तय...: पीएम मोदी

मैं सभी देशवासियों का ऋणी हूं: मोदी

नईदिल्ली। एनडीए की जीत के बाद पार्टी मुख्यालय में संबोधन की शुरुआत नरेंद्र मोदी ने 'भारत माता की जय' और 'जय जगन्नाथ' से की. पीएम ने कहा- आज बड़ा मंगल है. इस पावन दिन एनडीए लगातार तीसरी बार सरकार बनाने जा रहा है. पीएम ने कहा, हम जनता जनार्दन के बहुत आभारी हैं. पीएम मोदी बोले- जनता ने देशवासियों का विश्वास जताया है। पीएम मोदी ने चुनाव आयोग की सराहना करते हए कहा कि उन्होंने अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई है. पीएम मोदी ने कहा, यह दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की जीत है. ये भारत के संविधान पर अटूट निष्ठा की जीत है. ये विकसित भारत के प्रण की जीत है. ये 'सबका साथ-सबका विकास' के इस मंत्र की जीत है. यह 140 करोड़ भारतीयों की जीत है।

एम्स में 2 माह के बच्चे का ऑपरेशन

हार्ट की दोनों धमनियां जुड़ी थीं, बिना चीरफाड़ के किया दुर्लभ बीमारी का उपचार

भोपाल (नप्र)। एम्स भोपाल पहली बार दुर्लभ और जटिल जन्मजात हृदय की बीमारी से ग्रस्त 3 बच्चों का जीवन बिना ऑपरेशन किये अस्पताल के कार्डियोलॉजिस्ट डॉक्टर भूषण शाह और उनकी टीम के द्वारा बचाया गया। जिसमें से दो बच्चों की उम्र 1 साल से भी कम थी और तीनों ही हृदय की गंभीर बीमारी से जूझ रहे थे। पहले मामले में 2 महीने की बच्ची जिसका वजन 2 किलो था । उसके हृदय की दोनों धमनियां जुड़ी हुई थी। पेटेंट डक्टस आर्टेरियोसस (पी डी ए) हृदय की जन्मजात खराबी है जो कि तब होती है जब जन्म के समय भ्रूण की पल्मोनरी धमनी और एओर्टा के बीच का सामान्य चैनल बंद नहीं होता। जिसके कारण उसका हार्ट फेल होने की स्थिति में था। ऐसे में ऑपरेशन करना लगभग नामुमकिन था क्योंकि बच्ची की जान भी जा सकती थी। कार्डियोलॉजिस्ट डॉक्टर भूषण शाह ने इकोकार्डिओग्राफी की मदद से कमर की एक नस के माध्यम से नीतिनोल डिवाइस के द्वारा बिना सर्जरी के इस चैनल को बंद किया।

मंडी सीट पर कंगना रनौत की बड़ी जीत

● विक्रमादित्य सिंह को भारी मतों से दी मात

नई दिल्ली (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश की मंडी लोकसभा सीट से बड़ी खबर सामने आ रही है। मंडी से बीजेपी की तरफ से मैदान में उतरीं कंगना रनौत ने भारी मतों के साथ जीत दर्ज की है। सामने आ रहे आंकड़ों के मुताबिक, कंगना रनौत ने कांग्रेस के विक्रमादित्य सिंह को 70 हजार से अधिक वोटों से मात दी है। गौरतलब है कि मंडी शुरुआत से ही हाई प्रोफाइल सीट बनी हुई थी। इस सीट पर बीजेपी और कांग्रेस के बीच कड़ा मुकाबला देखने को मिला। हालांकि, अब नतीजे साफ हो चुके हैं।

ओडिशा में 24 साल का पटनायक राज अब खत्म

● बीजेपी 78 सीटों पर जीती, आंध्र में एनडीए सरकार, 162 सीटें जीती

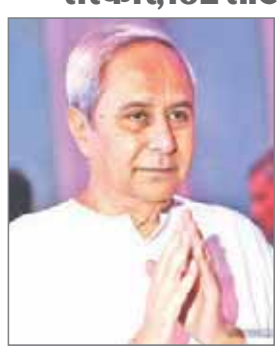

भुवनेश्वर/अमरावती (एजेंसी)। ओडिशा में 24 साल से सत्ता में काबिज नवीन पटनायक के हाथ से सत्ता जाती दिख रही है। अब तक के रुझान में बीजेपी 147 में से 80 सीटों पर आगे चल रही है। एग्जिट पोल में बीजेपी और बीजेडी में कांटे का मुकाबला बताया गया था। पोल में नवीन पटनायक की बीजेडी और भाजपा को, दोनों को 62-80 सीटें मिलने का अनुमान जताया था। वहीं, आंध्र प्रदेश में एनडीए (भाजपा, टीडीपी और जन सेना पार्टी) सरकार बनाता दिख रहा है। मौजूदा सीएम जगन मोहन रेड्डी की वायएसआरसीपी को खासा नुकसान हो रहा है। एग्जिट पोल में भी इस बार सत्ता बदलने का अनुमान जताया गया था। 5 एग्जिट पोल में एनडीए तो दो में सत्तारूढ़ पार्टी की सरकार बनते दिख रही है। आंध्र प्रदेश में वाईएसआर कांग्रेस पार्टी के जगन मोहन रेड्डी 2019 से सत्ता में हैं। जगन मोहन ने पिछली बार 175 में से 151 सीटों पर एकतरफा जीत दर्ज की थी।

पूर्व सीएम भूपेश बघेल चुनाव हार्

● कोरबा में कांग्रेस को बढ़त

रायपुर (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव-2024 के नतीजे आ गए हैं। छत्तीसगढ़ की सभी 11 लोकसभा सीटों के लिए मतगणना खत्म हो गई है। अब तक के रुझानों में भाजपा 10 सीटों पर जीत दर्ज कर चुकी है। वहीं कोरबा से कांग्रेस की ज्योत्सना महंत आगे हैं। हालांकि राजनांदगांव से पूर्व सीएम भूपेश बघेल चुनाव हार चुके हैं। अभी तक आंकड़ों के मुताबिक, रायपुर से भाजपा के बृजमोहन अग्रवाल, दुर्ग से विजय बघेल, राजनांदगांव से संतोष पांडेय और रायगढ़ से राधेश्याम राठिया की जीत तय मानी जा रही है। प्रदेश में चुनाव में 3 सांसद, 1 पूर्व सांसद भी लड़ रहे थे।

ज्येष्ठ मास का शिव प्रदोष पर

बड़वाले महादेव मंदिर में 4 क्विंटल फूलों से सजा गर्भगृह, आम का लगा भोग

भोपाल(नप्र)। भोपाल के प्राचीन बड़वाले महादेव मंदिर में ज्येष्ठ मास के भौम प्रदोष व्रत के शुभ अवसर पर मंगलवार को बाबा बटेश्वर का दिव्य श्रृंगार कर अभिषेक , रुद्राभिषेक और पूजा अर्चना की। इस दिन बन रहे खास सर्वार्थ सिद्धि योग में 4 क्विंटल फूलों से

गर्भगृह को सजाया गया। साथ ही भगवान को 4 क्विंटल आम का भोग लग समिति के सदस्य संजय अग्रवाल ने बताया कि बाबा बटेश्वर का श्रृंगार मोगरा, सेवंती, गुलाब, नोरंगा आदि फूलों से किया गया। इसके साथ ही बाबा को रत्नों से बना साफा पहनाया। उल्लेखनीय है कि कि ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि सोमवार को रात्रि 12 बजकर 18 पर शुरू हुई। तिथि की समाप्ति मंगलवार को रात्रि 10 बजकर 01 मिनट पर होगी। प्रदोष पर भगवान के पूजन के लिए मंदिरों में भक्तों की भीड़ उमड़ रही थी।

नासिक में एयरफोर्स का सुखोई क्रैश, खेत में गिरा

नासिक (एजेंसी)। वायुसेना का लड़ाकू विमान सुखोई मंगलवार को नासिक में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान ओवरहॉलिंग के लिए हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के पास था। नासिक रेंज के विशेष महानिरीक्षक डीआर कराले ने बताया कि सुखोई विमान के पायलट और को-पायलट सुरक्षित बाहर निकल आए। विमान शिरसगांव के पास एक खेत में गिरा। राजस्थान के पोकरण में हुए भारत शक्ति युद्धाभ्यास में शामिल तेजस फाइटर जेट 27 फरवरी की दोपहर करीब 2 बजे क्रैश हो गया था। यह जैसलमेर शहर से 2 किमी दूर जवाहर नगर स्थित भील समाज के हॉस्टल पर जा गिरा। तेजस के क्रैश होने की यह पहली घटना थी।

दोनों पायलट सुरक्षित

● ओवरहॉलिंग के लिए हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स के पास था विमान

बाजार 5.74 फीसदी टूटा, निवेशकों के 31 लाख करोड़ डूबे

● सेंसेक्स 4389 अंक गिरकर 72,079 पर बंद, सरकारी बैंकों का इंडेक्स 15 फीसदी नीचे

मुंबई (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव के नतीजों वाले दिन आज यानी, 4 जून को सेंसेक्स 4389 अंक (5.74 फीसदी) की गिरावट के साथ 72,079 के स्तर पर बंद हुआ। वहीं, निफ्टी में भी 1,379 अंक (5.93 फीसदी) की गिरावट रही, ये 21,884 के स्तर पर बंद हुआ। सेंसेक्स के 30 शेयरों में से 25 में गिरावट और 5 शेयरों में तेजी रही। बीएसई और एनएसई के शेयरों में करीब 15 फीसदी की गिरावट रही। पावर ग्रिड के शेयर 12 फीसदी से ज्यादा नीचे है। वहीं हिंदुस्तान यूनिलीवर के शेयर में करीब 5.74 फीसदी की तेजी रही। सभी सेक्टोरल इंडेक्स में गिरावट रही। निफ्टी एस बैंक इंडेक्स 15.14 फीसदी टूटा है। ऑयल एंड गैस इंडेक्स में 11.80 फीसदी की गिरावट रही। निफ्टी मेटल में 10.63 और रियल्टी में 9.62 फीसदी की गिरावट रही। ऑटो सेक्टर भी 3.33 फीसदी नीचे बंद हुआ।

भाजपा के साथ आते ही

'रोशन' हुआ पासवान का चिराग

बिहार में चिराग पासवान का स्ट्राइक रेट 100 फीसदी रहा

पटना (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव 2024 के रुझान अगर नतीजों में तब्दील हुआ तो चिराग पासवान का स्ट्राइक रेट 100 फीसदी रहेगा। भारतीय जनता पार्टी का साथ मिलते ही रामविलास पासवान का चिराग रोशन हो गया। इससे लोक जनशक्ति पार्टी के असली वारिस का भी फैसला होता दिख रहा है। बिहार में चिराग पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) पांच सीटों पर चुनाव लड़ी है और काउंटिंग में सभी सीटों पर एलजेपीआर के कैंडीडेट आगे चल रहे हैं। लोकसभा चुनाव 2024 के नतीजे चौंकाने वाले आते दिख रहे हैं। एनडीए के उम्मीद के मुताबिक देश में रिजल्ट नहीं आ रहा है। यूपी में बीजेपी को काफी नुकसान होता दिख रहा है। बिहार में भी बीजेपी का प्रदर्शन उम्मीद के मुताबिक नहीं दिख रहा है। यहां पर एनडीए को को करीब 31 सीटें मिलती दिख रही हैं। इनमें चिराग पासवान की पार्टी एलजेपी (रामविलास) को काफी फायदा हुआ है। चिराग पासवान का स्ट्राइक रेट 100 फीसदी दिख रहा है। बिहार एनडीए सभी सीटों पर चुनाव लड़ी है।

बदल गई कश्मीर की हवा

चुनावों में उमर और महबूबा दोनों हारे

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद हुए पहले संसदीय चुनावों में राज्य की सियासी हवा बदलती नजर आ रही है। सात चरणों में हुए लोकसभा चुनावों की हो रही मतगणना में राज्य के दो पूर्व मुख्यमंत्री हार की ओर बढ़ते दिख रहे हैं। जम्मू-कश्मीर की अनंतनाग-राजौरी लोकसभा सीट पर नेशनल कांफ्रेंस के मियां अल्ताफ पीडीपी की अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती से एक लाख 74 हजार 664 वोटों से आगे हैं। महबूबा के लिए यह बड़ा अंतर है। दूसरी तरफ नेशनल कांफ्रेंस के नेता और पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला भी बारामूला सीट पर पिछड़ते दिख रहे हैं। इस सीट पर निर्दलीय उम्मीदवार अब्दुल रशीद शेख उर्फ इंजीनियर रशीद उनसे करीब 89000 वोटों से आगे चल रहे हैं। इस बीच, नेशनल कांफ्रेंस के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला ने कहा कि उन्हें बारामूला लोकसभा सीट से जीतने की उम्मीद थी। अब्दुल्ला ने पत्रकारों से कहा, ''उतार-चढ़ाव होंगे लेकिन अंतिम परिणाम हमारे पक्ष में होंगे।'' बहरहाल, घाटी की एक और सीट श्रीनगर से नेशनल कांफ्रेंस के उम्मीदवार आगा सैयद रुहुल्लाह मेहदी पीडीपी के वाहिद उर रहमान पारा से एक लाख 20 हजार वोटों से आगे चल रहे हैं। निर्वाचन आयोग के रुझानों के अनुसार, जम्मू संभाग के उधमपुर सीट से भाजपा उम्मीदवार और केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह करीब 59000 मतों से आगे चल रहे हैं जबकि जम्मू से मौजूदा सांसद जुगल किशोर शर्मा 103,136 मतों से बढ़त बनाये हुए हैं। कश्मीर की तीन लोकसभा सीटों पर 50 प्रतिशत से अधिक मतदान हुआ था।

नगर निगम फर्जी बिल घोटाला

एमआईसी सदस्य ने अपनी ही परिषद को घेरा, आरोप- बड़े अफसरों की जानकारी के बिना गड़बड़ी संभव नहीं

इंदौर। नगर निगम में पांच फर्मों के फर्जी बिल और करोड़ों के भुगतान मामले में अब एमआईसी सदस्य राजेंद्र राठौर ने मोर्चा खोल दिया है। बीते दिनों सामने आए फर्जी बिल घोटाले में पिछली परिषद और अधिकारियों को आड़े हाथ लेते हुए आरोप लगाया कि जिन फर्मों को करोड़ों का भुगतान हुआ है, वह भुगतान आयुक्त, अपर आयुक्त, लेखा अधिकारी के संज्ञान और सहमति के बिना संभव ही नहीं है, इसलिए तत्कालीन समय के आयुक्त, संबंधित विभाग के अपर आयुक्त और लेखा अधिकारी की जवाबदेही इन भुगतानों के लिए तय होना चाहिए। मुख्यमंत्री को लिखे पत्र में गंभीरता से जांच कर प्रकरण में संलिप्त, दोषी पाए जाने वाले अधिकारी, ठेकेदारों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की मांग की है।

2012 में हुई गड़बड़ी का भी जिक्र किया, जांच एजेंसी नहीं करती प्रभावी कार्यवाही- पत्र में यह भी कहा है कि पुलिस विभाग के अलावा प्रमुख सचिव की अध्यक्षता में गठित कमेटी ने 16 मई से जांच

शुरू की। शासन की जांच एजेंसियों द्वारा भी ऐसे प्रकरणों में प्रभावी कार्यवाही नहीं की जाती है। नगर निगम जांच कमेटियों की भूमिका भी संदिग्ध रहती है। लोकायुक्त पुलिस द्वारा अधिकारियों के विरुद्ध अभियोजन स्वीकृति के प्रकरण विभागों द्वारा अनावश्यक रूप से लंबित रखे जाते हैं, जिसके कारण दोषी अधिकारियों को बचने के अवसर मिलते हैं। यहीं भ्रष्ट अधिकारी सेवानिवृत्ति के बाद भी संविदा पर सेवा रहकर भ्रष्टाचार में संलिप्त रहते हैं।

ट्रैफिक विभाग की गड़बड़ी का भी उल्लेख

वर्ष 2012 में यातायात विभाग में शहर की सड़कों/चौराहों पर लगने वाली सामग्री क्रय करने की प्रक्रिया के दौरान आर्थिक अनियमितता बरती गई थी, जिसमें ठेकेदार द्वारा सामग्री प्रदाय नहीं करने/सड़कों पर स्थापित नहीं करने पर भी भुगतान प्रस्तावित किया।

जिला कोर्ट से झटका लगा तो आरोपी जमानत के लिए हाई कोर्ट पहुंच गए

इधर निगम में अरबों रुपए की ड्रेनेज और सड़क कागजों पर बनाने का घोटाला करने वाले अब जेल से बाहर निकलने के लिए हाथ-पैर मार रहे हैं। किसी के खिलाफ एक तो किसी पर छह-छह एफआईआर दर्ज हो चुकी है। फिर भी अपराध स्वीकार नहीं कर रहे हैं। सभी दूसरों पर जिम्मेदारी डाल रहे हैं। किसी की अर्जी जिला कोर्ट तो किसी की हाई कोर्ट में लंबित है। घोटाले के मुख्य आरोपी कॉन्ट्रेक्टर मुरलीधर ने पहले जिला कोर्ट में याचिका दायर की थी जो खारिज हो गई। अब हाई कोर्ट में दायर की है। उदयसिंह भदौरिया भी जिला कोर्ट से झटका लगने के बाद अब हाई कोर्ट से राहत पाने के लिए प्रयास कर रहा है। घोटाले का मास्टर माइंड अभय राठौर ने भी हाई कोर्ट का रुख किया है। आरोपी ठेकेदार मो. सिद्दीकी ने भी जिला कोर्ट ने जमानत नहीं मिली तो हाई कोर्ट में अपील की।

14 वर्षीय बालिका से दुष्कर्म करने वाले सौतेले पिता को 20 वर्ष का कठोर कारावास

3 जुलाई 2019 को बुजुर्ग महिला अपनी 14 वर्षीय पोती के साथ पुलिस थाने पहुंची

इंदौर। 14 वर्षीय बालिका से दुष्कर्म करने वाले सौतेले पिता को विशेष न्यायालय ने 20 वर्ष कठोर कारावास की सजा सुनाई। कोर्ट ने दुष्कर्मी पर 59 हजार रुपये अर्थदंड भी लगाया है। दुष्कर्मी बालिका पर धर्म परिवर्तन के लिए भी दबाव बनाता था।

बच्ची ने कहा मां के पास अच्छा नहीं लगता

उसने बताया कि उसके बेटे-बहू वर्ष 2008 में अलग-अलग हो गए थे। दो वर्ष से उसकी बहू आजाद नगर क्षेत्र में एक मुस्लिम युवक के साथ निकाह करके अपने दोनों बेटियों के साथ रह रही है। 8 दिसंबर 2022 को उसकी पोती उसके घर आई और बोली कि मुझे मम्मी के पास अच्छा नहीं लगता है। मैं आपके साथ रहूंगी। इसके बाद से बालिका उसके साथ है। यह बालिका उदास रहती थी। दादी ने बालिका से इसकी वजह पूछी तो उसने बताया कि 6 दिसंबर 2022 को दोपहर में वह घर पर अकेली थी। इस दौरान उसका सौतेला पिता आया और उसके साथ गलत काम किया। इसके थोड़ी देर बाद पास में रहने वाला एक नाबालिग भी आया और उसके साथ दुष्कर्म किया। कुछ देर बाद सौतेला पिता और नाबालिग आए और कहा कि यह बात किसी को बताई तो जान से खत्म कर देंगे। बालिका ने यह भी बताया कि उसका सौतेला पिता उस

पर धर्म परिवर्तन करने के लिए भी दबाव बनाता था। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज करते हुए आरोपितों के खिलाफ धारा 354, 450, 506, 376(3), 376 (डी), 376(2) (एफ), पाक्सो एक्ट की धारा 5/6, 5(एल) /6, 7/8, धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम की धारा 3/5 के तहत प्रकरण दर्ज किया।

अभियोजन की ओर से लोक अभियोजक सुशीला राठौर ने पैरवी की।विशेष न्यायाधीश सुरेखा मिश्रा ने प्रकरण में निर्णय पारित करते हुए बालिका के सौतेले पिता को 20 वर्ष कठोर कारावास और 59 हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई। कोर्ट ने बालिका को प्रतिकर के रूप में एक लाख रुपये दिलवाए जाने की अनुशंसा भी की है। मामले में नाबालिग आरोपित के खिलाफ बाल न्यायालय में प्रकरण विचाराधीन है।

इंदौर में बना दूसरा रिकॉर्ड

शंकर लालवानी ने दर्ज की इतिहास की सबसे बड़ी जीत

इंदौर। मध्य प्रदेश की सबसे चर्चित सीट इंदौर में भाजपा प्रचंड जीत हासिल की है। भाजपा नेता शंकर लालवानी ने देशभर में सबसे ज्यादा मत हासिल करने वाले उम्मीदवार बने हैं। उन्होंने 11 लाख से अधिक वोटों से जीत हासिल की है। कलेक्टर आशीष सिंह ने उन्हें प्रमाणपत्र सौंपा है। इंदौर के इतिहास में पहली बार है कि कांग्रेस मैदान में नहीं है। हालांकि कांग्रेस उम्मीदवार के भाजपा में जाने के बाद कांग्रेस ने नोटा को प्रमोट किया था। ऐसे में नोटा ने भी इस बार एक नया इतिहास रचा है। नोटा को इंदौर में 2 लाख 18 हजार 355 मत मिले हैं। बता दें कि इंदौर में नोटा दूसरे नंबर पर मुकाबले में है। लेकिन नियमों के मुताबिक जीत के अंतर में उसे शामिल नहीं किया जाएगा। तीसरे नंबर पर बसपा के संजय सोलंकी हैं, उनमें और लालवानी को मिले वोटों में दस लाख से ज्यादा का अंतर है, इसे ही जीत का मार्जिन माना जाएगा।

भाजपा नेता ने रचा नया इतिहास- भाजपा के शंकर लालवानी इंदौर में शानदार जीत हासिल की है। ये अब तक के इतिहास की सबसे बढ़ी जीत मानी जा रही है। इससे पहले 2019 में गुजरात के नावासार सीट पर भाजपा के सीआर पाटिल ने 6,89,668 वोटों से अब तक की सबसे बड़ी जीत हासिल की थी। इंदौर में भाजपा के शंकर ललवानी के अलावा कुल 13 और प्रत्याशी मैदान में हैं, जिनमें प्रमुख प्रत्याशी के तौर पर कोई भी मौजूद नहीं है। इंदौर भाजपा का गढ़ माना जाता है और यहां पिछले कुछ दशकों से भाजपा लगातार विजय दर्ज कराती आ रही है।

नोटा ने रचा नया कीर्तिमान

नोटा यानी इनमें से कोई भी नहीं के नाम अब तक 51,660 वोट मिलने का रिकॉर्ड है। वहीं इंदौर में नोटा को 2 लाख 18 हजार 355 मत मिले हैं। बता दें कि वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में नोटा को बिहार की गोपालगंज सीट पर सर्वाधिक वोट मिले थे। तब इस क्षेत्र के 51,660 मतदाताओं ने नोटा का विकल्प चुना था और नोटा को कुल मतों में से करीब पांच प्रतिशत वोट मिले थे।

पत्नी को बुखार की दवा बताकर गर्भपात की दवा दी

ससुर ने कहा छोड़ दो, सास ने घर से निकाला, छह माह के प्यार में की थी शादी

इंदौर। इंदौर के राजेन्द्र नगर में रहने वाली एक युवती ने 6 माह के प्यार में शादी रचा ली। पति को बच्चा नहीं चाहिए तो उसने धोखे से गर्भपात करा दिया। पिता ने कहा कि पत्नी को छोड़ दो। इसके बाद सास-ससुर ने मारपीट कर दी। पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर दहेज प्रताड़ना और मारपीट का केस दर्ज कर लिया। राजेन्द्र नगर पुलिस के मुताबिक 22 साल की युवती की शिकायत पर उसके पति गणेश बघेल निवासी बिजलपुर, ससुर धूमसिंह और सास शांता बाई के खिलाफ प्रताड़ना करने के मामले में केस दर्ज किया गया है। युवती ने अपनी शिकायत में

बताया कि उसकी गणेश से दोस्ती हुई। इसके छह माह बाद दोनों ने परिवार की मर्जी के बगैर शादी कर ली। 8 फरवरी 2024 को दोनों घर से चले गए। इसके एक माह बाद गणेश के पिता धूमसिंह ने संपर्क किया। खजराना गणेश मंदिर में हमारी शादी करवा दी। बाद में सास, ससुर और पति के साथ में रहने लगी। पीड़िता ने बताया कि गर्भवती हुई तो मेरी तबीयत बिगड़ गई। पति ने एक दवा लाकर दी और मुझे खिला दी। दवा लेते ही 15 दिनों तक ब्लीडिंग हुई। पर पति ने मुझे अस्पताल नहीं ले गए। बड़ी बहन और जीजाजी को यह बात पता चली तो वे डॉक्टर के पास लेकर पहुंचे। यहां से आने के बाद पति गणेश पिपल्याहाना के नक्षत्र अस्पताल ले गया। यहां डॉक्टर को बताया। यहां डॉक्टर को गणेश ने बताया कि उसे बच्चा नहीं चाहिए था, इसलिये बुखार का कहकर गर्भ निरोधक गोली खिला दी थी। यह बात डॉक्टर के सामने पता चली। यहां उपचार के बाद मैं अपनी बड़ी बहन के यहां चली गई। 15 दिन बाद पति मुझे जबरदस्ती अपने साथ ले गए। यहां जाने के बाद ससुर धूमसिंह ने कहा बहू को छोड़ दो। दूसरी शादी करवा देंगे। वैसे भी यह दहेज लेकर नहीं आई थी। 27 मई को इसी बात को लेकर फिर से पति गणेश, ससुर धूमसिंह और सास शांति बाई ने विवाद किया।मुझे घर से भी निकाल दिया।

प्रेमी का रिश्ता तय हुआ तो प्रेमिका ने जान दी

इंदौर। इंदौर के हीरा नगर में रहने वाली एक युवती ने सोमवार को सुसाइड कर लिया। उसने एक सुसाइड नोट भी छोड़ा है। जिसमें प्रेम में असफल होने की बात कही है। युवती ने नोट में लिखा है कि उसके प्रेमी का रिश्ता कहीं और हो गया। इस कारण वह जीना नहीं चाहती। उसने सुसाइड नोट में किसी को भी जिम्मेदार नहीं ठहराया है।हीरा नगर पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक आयुषी (22) पुत्री राजेश बरदर निवासी लाहिया कॉलोनी ने अपने घर में सुसाइड कर लिया। सोमवार को उसकी मां ने उसे फंदे पर देखा। इसके बाद परिवार के अन्य लोगों को जानकारी दी। परिवार के मुताबिक आयुषी ने लॉकडाउन के समय पढ़ाई छोड़ दी थी। उसके परिवार में दो भाई हैं। वह इकलौती बेटी थी।

एक माह पहले हो गई थी प्रेमी की सगाई- पुलिस को मिली जानकारी के मुताबिक आयुषी का इलाके में रहने वाले एक युवक से प्रेम प्रसंग चल रहा था। वह दोनों शादी करना चाहते थे। तीन माह पहले उनके बीच रिश्ते को लेकर बात हुई। लेकिन एक माह पहले लड़के ने कहीं और सगाई कर ली। इसके बाद से वह डिप्रेशन में थी।

पशु-पक्षियों की रक्षा के लिए युवाओं ने की अपील, मांसाहार के नुकसान बताए

इंदौर । मेघदूत गार्डन पर 14 वां राष्ट्रीय पशु अधिकार दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के आयोजक हर्ष मेहता ने बताया इंदौर शहर के जागरूक पशु प्रेमियों ने गीत, भाषण, तथा कविताओं के माध्यम से उन सभी जीवों को श्रद्धांजलि दी जो पिछले एक साल में मानव स्वार्थ के लिए मारे गए हैं। यह कार्यक्रम इंदौर शहर के साथ ही दुनिया भर में 170 से ज्यादा शहरों में मनाया गया। भारत में यह कार्यक्रम दिल्ली, मुंबई, जयपुर, गोवा, अहमदाबाद, पुणे, रायपुर, बेंगलुरु तथा 25 अन्य शहरों में भी मनाया गया।

जागरूक किया - राष्ट्रीय पशु अधिकार दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य लोगों में पशुओं के प्रति करुणा भाव जगाना है। लोगों को इस बात से अवगत कराया जा रहा है कि पशु मांस सेवन करने से पर्यावरण को सबसे अधिक हानि होती है। डेरी तथा मांस उद्योग वातावरण परिवर्तन के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार है। आज के समय में भारत देश में 80 प्रतिशत लोग मांसाहारी हैं जो कि बढ़ती हुई गर्मी, स्वास्थ्य, तथा हृदय रोग की समस्याओं का मुख्य कारण है।

इंदौर में सोया-पाम तेल में गिरावट, सोने की कीमतों में नरमी, चांदी स्थिर

इंदौर। अंतरराष्ट्रीय बुलियन वायदा मार्केट में सप्ताह के पहले ही दिन यूएस मुद्रास्फीति रिपोर्ट के प्रभाव के चलते सोना आंशिक रूप से कमजोर खुला। कॉमेक्स पर सोना 2331 डॉलर प्रति ओंस पर कारोबार करता देखा गया। इंदौर में कमजोर कारोबार और ज्वेलर्स की डिमांड के अभाव में सोना केडबरी आंशिक घटकर 72350 रुपए प्रति दस ग्राम रह गया। कॉमेक्स पर सोना वायदा 2,334 डॉलर तक जाने के बाद 2331 डॉलर और नीचे में 2,314 डॉलर प्रति ओंस और चांदी ऊपर में 30.62 डॉलर तक जाने के बाद 31.42 डॉलर और नीचे में 29.77 डॉलर प्रति ओंस पर कारोबार करता देखी गई। सीबॉट और डॉलर में कमजोरी के कारण सोयाबीन तेल का मार्केट कुछ फिसल गया है जिसका असर हाजिर बाजारों पर भी देखा गया। हालांकि ऊंचे दामों पर सोया तेल में लेवाली कुछ सुस्त देखी जा रही थी।

इंदौर में नोटा ने बनाया रिकॉर्ड, देश में सबसे ज्यादा वोट लाकर मुकाबले में दूसरे नंबर पर

इंदौर। मत देना भी है, और उसे कोई भी उम्मीदवार पसंद नहीं है तो वह यह विकल्प चुन सकता है। वोटिंग मशीन में नोटा का विकल्प का बटन जोड़ा गया। नोटा का विकल्प लागू करने वाला भारत विश्व का 14वां देश था। जबकि रूस ने 2006 में इस विकल्प को हटा दिया है। भारत में 2014 के लोकसभा चुनाव में नोटा के विकल्प की सुविधा मतदाताओं को चुनाव आयोग ने उपलब्ध कराई थी।

आखिर इंदौर में नोटा को इतन वोट क्यों

बता दें कि इंदौर में कांग्रेस के प्रत्याशी अक्षय बम ने नामवापसी के दिन कांग्रेस के साथ दगा करते हुए भाजपा की सदस्यता ले ली थी। इसके बाद कांग्रेस ने किसी को भी समर्थन नहीं देते हुए कहा था कि जनता के पास नोटा विकल्प है। कांग्रेस ने नोटा दबाने के लिए एक तरह से अभियान भी चलाया था। वहीं अक्षय बम को भाजपा में लेने पर कुछ भाजपाई भी नाराज नजर आ रहे थे। इन सभी कारणों से इंदौर में नोटा को अब तक के सर्वाधिक मत मिलने का अनुमान लगाया जा रहा था।

नोटा है क्या

जब चुनाव मैदान में खड़े उम्मीदवार पसंद के नहीं हों तो आखिर किसे वोट दिया जाए। यह एक गंभीर प्रश्न रहता है मतदाता के सामने। मत देना एक मौलिक दायित्व है। मतदान प्रक्रिया पर सरकार एक बड़ी राशि व्यय करती है। कुछ देशो में मत न देने पर जुर्माने का प्रावधान है। अंग्रेजी के नोटा संक्षिप्त रूप का अर्थ ही है 'नन ऑफ द अबोव' यानी उपरोक्त में कोई भी नहीं। इसकी शुरुआत 1976 में अमेरिका के कैलिफोर्निया राज्य की सांता बारबरा काउंटी की म्यूनिसिपल इंफॉर्मेशन काउंसिल में लागू करने से हुई थी। बाद में भारत में पीयूसीएल ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाकर यहां भी नोटा लागू करने की मांग की थी। हमारे देश में 2013 नोटा (उपरोक्त में से कोई नहीं) का प्रावधान लागू हुआ था। मत देना भी है, और उसे कोई भी उम्मीदवार पसंद नहीं है तो वह यह विकल्प चुन सकता है। वोटिंग मशीन में नोटा का विकल्प का बटन जोड़ा गया। नोटा का विकल्प लागू करने वाला भारत विश्व का 14वां देश था। जबकि रूस ने 2006 में इस विकल्प को हटा दिया है। भारत में 2014 के लोकसभा चुनाव में नोटा के विकल्प की

सुविधा मतदाताओं को चुनाव आयोग ने उपलब्ध कराई थी।

प्रदेश में नोटा

मध्य प्रदेश में 2014 के चुनाव में 3 लाख 91 हजार 771 मत नोटा को प्राप्त हुए थे, जो राज्य में कुल वैध मतों का 0.81 प्रतिशत था, जबकि 2019 में 3 लाख 40 हजार 984 मत नोटा को मिले जो 0.66 प्रतिशत था। 2019 में प्रदेश में नोटा का सबसे कम उपयोग करने वाले संसदीय क्षेत्र मुरैना, सतना, रीवा, इंदौर और बालाघाट थे। इस तरह 2014 में नोटा का कम प्रयोग करने वाले क्षेत्र ग्वालियर, मुरैना, भोपाल, इंदौर और भिंड थे। 2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव में मुरैना और इंदौर में नोटा का प्रयोग कम हुआ।

देश में नोटा

2019 के लोकसभा चुनाव में देश में नोटा को मतदाताओं ने 65 लाख 22 हजार 772 मत दिए थे, जो देश में डाले गए कुल वैध मतों का 1.06 प्रतिशत थे। देश में नोटा का प्रयोग करने में बिहार अग्रणी था। बिहार में 8 लाख 16 हजार 950 मतदाताओं ने नोटा में वोट दिया था। 2014 के लोकसभा के मुकाबले प्रदेश और देश में नोटा ने कम मत प्राप्त किए हैं, इससे स्पष्ट होता है कि मतदाता पसंद के उम्मीदवार को मत देना पसंद कर रहा है। वैसे वह कहीं भी मत दे पर अपने मत का उपयोग करना चाहिए। मतदान करना हमारा मौलिक अधिकार है। इंदौर में दो लाख से अधिक वोट मिल गए हैं। नोटा का सबसे अधिक वोट का रिकार्ड बिहार की गोपालगंज सीट का है। यहां पर नोटा को 51 हजार 660 वोट मिले थे। दूसरे क्रम पर पश्चिम चंपारण में 45,609 वोट नोटा को मिले थे।

जीत नहीं सकता नोटा

सवाल उठ रहा है कि क्या नोटा को सर्वाधिक वोट मिल सकने की स्थिति में विजेता कौन होगा? दूसरे, क्या नोटा को भी पूर्ण प्रत्याशी माना जाना चाहिए? तीसरे, अगर 'राइट टू रिजेक्ट' के तौर पर चुनाव में अगर नोटा की कोई वास्तविक अहमियत नहीं है तो ईवीएम में इसके प्रावधान का औचित्य क्या है?एक सवाल ये भी है कि इंदौर के वोटरों ने बड़ी संख्या में नोटा का बटन दबाया तो क्या चुनाव में नोटा जीतेगा? वर्तमान नियमों के तहत यह संभव नहीं है, क्योंकि चुनाव आयोग का नियम कहता है कि अगर अपवाद स्वरूप किसी चुनाव में नोटा को सर्वाधिक वोट मिलते हैं तो चुनाव में प्राप्त वोटों की संख्या के हिसाब से नंबर दो पर रहा प्रत्याशी ही विजयी घोषित होगा। कहने का आशय यही है कि नोटा सर्वाधिक वोट तो ले सकता है, लेकिन चुनाव नहीं जीत सकता।नोटा 'राइट टू रिजेक्ट' (नकारने के अधिकार) के तहत मतदाता के पास एक विकल्प है, जो किसी भी प्रत्याशी को वोट देना न चाहता हो, वो नोटा को वोट दे सकता है। लेकिन नोटा भौतिक प्रत्याशी नहीं है। चुनाव प्रत्याशी कोई हाड़ मांस का व्यक्ति ही हो सकता है। ऐसे में नोटा की मौजूदगी किसी को भी वोट न देने के अधिकार के तहत एक आभासी विकल्प के रूप में है।

इंदौर की शादीशुदा महिला को लुटेरी दुल्हन बनाना चाहते थे

कैटरिंग कंपनी के मैनेजर और मकान मालिक ने बंधक बनाकर रखा, रेप भी किया

इंदौर। इंदौर में लगभग 40 दिन लापता रही 22 साल की शादीशुदा महिला को पुलिस ने ढूंढ निकाला। महिला के बयान के आधार पर कैटरिंग कंपनी के मैनेजर और उसके मकान मालिक को आरोपी बनाया गया है। आरोपी महिला की दूसरी जगह शादी करना चाहते थे। आरोपियों ने उसे कहा था कि तुम्हारी अच्छे घर में दूसरी शादी करा देंगे। जमे तो ठीक है नहीं तो कुछ दिन बाद वहां से सामान लेकर वापस आ जाना। मैनेजर और मकान मालिक महिला को वह अपने साथ ले गए। लेकिन परिवार के लोगों को गुमराह करते रहे। बाद में पीड़िता परिवार के पास पहुंची तो पूरे मामले से पर्दा उठ गया। गिरफ्तार आरोपी इंदौर के बाहर शादियां कराता था।

इस कांड में उसका बेटा भी शामिल है। लेकिन पुलिस ने अभी उसे आरोपी नहीं बनाया है। मल्हारगंज पुलिस के मुताबिक 28 अप्रैल 2024 को महावीर बाग से 22 साल की शादीशुदा महिला गायब हो गई थी। वह केटरिंग का काम करती थी। सास ने उसे घर जाने के

लिए बड़ा गणपति से ई रिक्शा में बैठाया। यहां केटरिंग कंपनी के मैनेजर अरूण परमार निवासी बड़ा गणपति ने उतारा और अपने मकान मालिक हेमंत जैन से मिलवाया। इसके बाद महिला को हेमंत के घर ले गया। यहां अरूण ने उसे अपने कमरे में रखा। उसके साथ रेप किया और फिर अपने भाई के यहां देवास छोड़ आया। यहां से हेमंत और उसका बेटा उसे लेने पहुंचे। बाद में फिर बड़ा गणपति पर अपने घर में रखा। वहां उसे कमरे में बंद करके रखा जाता था। यहां मौका मिलने पर सुबह वह घर से भाग गई और सीधे अपने पति के पास पहुंची और उन्हें पूरे मामले की जानकारी दी। पुलिस ने इस मामले में अरूण परमार और हेमंत जैन को आरोपी बनाया है।

यहां कहां मजदूरी करेगी, अच्छे घर में शादी करा दूंगा

पीड़िता ने बताया कि हेमंत और उसके बेटे व पत्नी ने इंदौर आने के बाद उसे झांसे में लिया कहा कि इंदौर में कहां मजदूरी करके अपना जीवन निकालेगी। उन्होंने पहले भी बहुत शादी कराई है। इसके बाद हेमंत ने गुजरात में रिश्ता देखा और महिला का जीपीओ से आधार कार्ड बनवा दिया।

मौका देखकर घर से भागी

पीड़िता ने बताया कि हेमंत की नीचे कपड़े की दुकान है। जब भी वह घर से जाता तो बाहर लोहे के गेट पर ताला लगा देता। पत्नी और बेटा उसे अच्छे घर में शादी का भरोसा दिलाते थे। उसे थोड़े दिन बाद लगा कि वह उनके किसी जाल में फंस रही है। इसके बाद मौका देखकर रातभर जागी और सुबह सुबह घर से भाग निकली। इसके बाद परिवार को पूरी बात बताई। परिवार के लोग उसे द्वारकापुरी थाने लेकर पहुंचे। यहां महिला एसआई ने पीड़िता के बयान लिए। इस मामले में हेमंत को पुलिस ने हिरासत में लिया है। जबकि अरूण अभी फरार है। जानकारी के मुताबिक हेमंत इसी तरह से गरीब लड़कियों को बहला फुसलाकर उनकी शादी करवाता है। पुलिस ने उससे अन्य मामलों को लेकर पूछताछ नहीं की है।

संपादकीय

परिवारवाद से कोई बचा नहीं

इस लोकसभा चुनाव के बाद सरकार किसी भी गठबंधन की बने, लेकिन चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा ने एक बड़ा मुद्दा परिवारवाद को बनाया था। एजेंडा साफ था कि ये पार्टियां मूलतः परिवारवादी पार्टियां हैं और इनकी राजनीति का एकमात्र उद्देश्य केवल अपनों का कल्याण करना है न कि आम लोगों का। हकीकत में परिवारवाद का घुन भाजपा और सहयोगी दलों में भी उतना ही है, जितना कि इंडिया गठबंधन से जुड़े राजनीतिक दलों में। हाल में एक एनजीओ प्रजातंत्र फाउंडेशन ने महत्वपूर्ण खुलासा किया है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में देश के दो बड़े राजनीतिक दलों भाजपा व कांग्रेस के हर 4 में से 1 उम्मीदवार अपनी पारिवारिक विरासत के चलते राजनीति में आया है। यानी ऐसे उम्मीदवारों के पहले उनके परिवार के लोग राजनीति में रहे हैं और टिकट मिलने में कहीं न कहीं परिवार के राजनीति में होने का फायदा मिला है। रिपोर्ट में कहा गया है कि दोनों पार्टियों ने मिलकर 768 उम्मीदवारों की पृष्ठभूमि की जांच की, जिनमें से 209 की राजनीतिक विरासत रही है। इस पूरी रिपोर्ट के विश्लेषण को चुनाव नतीजों के बाद जारी किया जाएगा। प्रजातंत्र फाउंडेशन के अनुसार राजनीति में पारिवारिक विरासत से मतलब है- जहाँ कोई व्यक्ति अपने पारिवारिक संबंधों या स्थापित राजनीतिक रिश्तेदारों से जुड़ाव के कारण राजनीतिक क्षेत्र में आता है। इससे उसे नेटवर्क और संसाधनों तक पहुँच जैसे लाभ मिलते हैं। संस्था ने इस अध्ययन में इन उम्मीदवारों को दूसरी, तीसरी या चौथी पीढ़ी के राजनेताओं या राजनेताओं के रिश्तेदारों के रूप में अलग-अलग पेश किया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार वंशवाद की राजनीति के खिलाफ अक्सर मुखर रहने वाली सत्तारूढ़ भाजपा के 442 उम्मीदवारों में से 110 यानी करीब 24.88 प्रतिशत राजनीतिक परिवारों से आते हैं। इसकी तुलना में कांग्रेस के 326 उम्मीदवारों में से 99 की पृष्ठभूमि राजनीतिक परिवारों से है। इस तरह संख्या में तो कांग्रेस में परिवारवादी उम्मीदवार बीजेपी से कम हैं, लेकिन यदि प्रतिशत के हिसाब से देखा जाए तो कांग्रेस के 30.36 प्रतिशत उम्मीदवारों की राजनीतिक विरासत है। इसी तरह बीजेपी की बात करें तो 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए भाजपा के राजनीतिक विरासत वाले 110 उम्मीदवारों में से 69 दूसरी पीढ़ी के राजनेता हैं। इनमें से उल्लेखनीय हैं -पूर्व केंद्रीय मंत्री सुषमा स्वराज की बेटी बांसुरी स्वराज, जो नई दिल्ली सीट से अपनी राजनीतिक शुरुआत कर रही हैं। इनके अलावा पूर्व मुख्यमंत्रियों बी. एस. येदियुरप्पा और राव बीरेंद्र सिंह के बेटे बी.वाई. राघवेंद्र और राव इंद्रजीत सिंह शामिल हैं। हाल ही में कांग्रेस से अलग हुए रवनीत सिंह बिट्टू पंजाब के पूर्व सीएम बेअंत सिंह के पोते हैं। भाजपा की सूची में केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर, धर्मेंद्र प्रधान, पीयूष गोयल और किरेन रिजिजू जैसे कई हाई-प्रोफाइल दूसरी पीढ़ी के राजनेता भी शामिल हैं। तीसरी पीढ़ी के राजनीतिक नेताओं में केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, राजस्थान की पूर्व सीएम वसुंधरा राजे के बेटे दुष्यंत सिंह और ज्योति मिर्धा शामिल हैं। इसके अलावा, भाजपा के उम्मीदवारों की सूची में पूर्व मंत्री अर्जुन पवार की पुत्रवधू भारती पवार, पूर्व प्रधानमंत्री एच.डी. देवेगौड़ा के दामाद सी.एन. मंजूनाथ, पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह की पत्नी परनीत कौर जैसे नाम शामिल हैं। कांग्रेस के 326 उम्मीदवारों में से 99 की पृष्ठभूमि राजनीतिक है। पार्टी के 80 उम्मीदवार दूसरी पीढ़ी के राजनेता हैं। इस सूची में कमलनाथ के बेटे नकुलनाथ, अशोक गहलोत के बेटे वैभव गहलोत, दिवंगत वीरभद्र सिंह के बेटे विक्रमादित्य सिंह, वाई.एस. राजशेखर की बेटी वाई.एस. शर्मिला, सुशील शिंदे की बेटी प्रणीति शिंदे और दिवंगत तरुण गोगोई के बेटे गौरव गोगोई आदि पूर्व मुख्यमंत्रियों के बच्चे हैं। कांग्रेस ने कम से कम चार तीसरी पीढ़ी के राजनेताओं को भी मैदान में उतारा है।

नजरिया

दीपक सिंह

(आईएएस अधिकारी और इंदौर के कमिश्नर)

विश्व पर्यावरण दिवस के मकसद को मप्र सार्थक करेगा

मध्यप्रदेश में पर्यावरण संरक्षण के लिए सतत रूप से कार्य किये जा रहे हैं। मध्य प्रदेश की जनता जनार्दन पर्यावरण प्रेमी होने के साथ पर्यावरण के इको सिस्टम के प्रति संवेदनशील भी है। पर्यावरण शिक्षा को सुनिश्चित करने के लिए विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में पर्यावरण चेतना कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। स्कूल-कॉलेज में पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम हो रहे हैं। आज के युवा पर्यावरण के प्रति सजग और समर्पित है। आज के समय की एक और मांग है कि वृक्षों का स्थानांतरण यानी ट्री ट्रांसप्लांट करना। इसके बारे में जागरूकता की बहुत आवश्यकता है।

विश्व पर्यावरण दिवस वर्ष 1972 में पर्यावरण संरक्षण के महत्व को जागरूक करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा शुरू किया गया था। यह दिन हर साल 5 जून को मनाया जाता है और इसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण के प्रति संवेदना को बढ़ावा देना है। वैसे तो पर्यावरण एक दिन कायक्रम करने का विषय नहीं है, यह एक संकल्प है जो निरन्तर चलने वाली सुधारात्मक प्रक्रिया का एक हिस्सा है। 5 जून एक ऐसा अलार्म है जो हमें पर्यावरण के प्रति अपने कर्तव्य का बोध करता है। इस दिन लोग पर्यावरण संरक्षण के महत्व को समझने और इसके संरक्षण के लिए समेकित स्वर में आवाज उठाते हैं।

अक्सर देखा गया है कि निर्माण कार्यों में पेड़ों को काट दिया जाता है। जबकि, उन्हें ट्रांसप्लांट कर बचाया जा सकता है। इसके लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता है। यह कार्य बहुत जटिल भी नहीं है। अन्य राज्यों की अपेक्षा मध्यप्रदेश में जंगलों एवं वृक्षों की संख्या अच्छी है। लेकिन, हमें इसे समय की जरूरत को देखते हुए और बढ़ाना है। ट्री ट्रांसप्लांट से हम पर्यावरण को संरक्षित कर सकते हैं। जल संरक्षण के लिए जल संरक्षण अभियान और जल संचारण परियोजनाएं चलाई जा रही हैं। शहरों में रेन वॉटर हार्वेस्टिंग को बढ़ावा देने के लिए नियम में स्पष्टता लाई जा रही है। जबकि, ग्रामीण क्षेत्र में स्टॉप डेम, खेत तालाब, सिंचाई की आधुनिक पद्धति ड्रिप इरीगेशन जिसमें जल को कल के लिए बचाया जा सके, इस दिशा में काम चल रहा है।

मप्र में बूंद बूंद से खेती की अवधारणा पर कार्य किया जा रहा है। सबसे अच्छी बात यह है कि ग्रामीण युवा जल संरक्षण को लेकर बहुत जागरूक दिखाई दे रहे हैं। स्वच्छता अभियान चलाकर शहरों और गांवों को स्वच्छ रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में कचरा निस्तारण किया जा रहा है। शहरों में तो दिन और रात सफाई हो रही हैं। इंदौर भारत का पहला ऐसा शहर बना है जो स्वच्छता के 7 कीर्तिमान स्थापित कर चुका है। वहीं कई गांव है जो आदर्श ग्राम बन कर प्रेरणा दे रहे हैं। बिजली और पानी की बचत के लिए जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण को कम करने के लिए उपायों पर काम किया जा रहा है। सुदूर क्षेत्रों में पेड़ लगाने और वन्यजीव संरक्षण के लिए परियोजनाएं शुरू की गई हैं। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का मुकाबला करने के लिए सामुदायिक संगठनों का सहयोग दिया जा रहा है। इन सभी कार्यों का उद्देश्य प्रदूषण को कम करके एक स्वस्थ और सुरक्षित पर्यावरण का संरक्षण करना है। जिससे आने वाली पीढ़ी खुली हवा में सांस ले सके और शुद्ध हवा, शुद्ध जल आदि उनके लिए बचे रहे।

जैविक खेती आज की जरूरत है। किसान इसके प्रति जागरूक हो रहे हैं लेकिन अभी और जागरूकता बाकी है। हम सब को मिलकर देशहित में प्रयास करना चाहिए कि जैविक खेती को अधिक से अधिक अपनाकर पेस्टिसाइड के उपयोग को कम किया जाए। इससे हमारे स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और पर्यावरण का तंत्र भी मजबूत होगा। आज के जमाने में हो रही बीमारियों में बहुत बड़ा कारण दवाई के छिड़काव से उत्पादित खेती का अनाज, सब्जी आदि का सेवन करना है। जबकि जैविक खेती न सिर्फ हमारे स्वास्थ्य को बेहतर बनाती है बल्कि आर्थिक रूप से हमें सक्षम भी बनाती है। इतना ही नहीं जैविक खेती से मिट्टी की उर्वरता भी बढ़ती है।

आज 5 जून से मध्य प्रदेश में 'नमामि गंगे' अभियान प्रारंभ किया जा रहा है। इस अभियान में तालाब, बावड़ी, पोखर, नदियों और अन्य जलस्त्रोतों का संरक्षण और पुनरुद्धार होगा, वहीं व्यापक पैमाने पर वृक्षारोपण की तैयारी भी इस दौरान की जाएगी। अभियान के दौरान जल संरचनाओं के उन्नयन का कार्य सर्वोच्च प्राथमिकता के आधार पर कराये जाएंगे। अभी वर्तमान में कुँए, बावड़ी और तालाब के गहरीकरण और उन्हें पुनर्जीवित करने की आवश्यकता

महसूस की जा रही है। वहीं नदियों को उनका अस्तित्व लौटने के प्रयास जारी है।

नगरीय क्षेत्र में जल संरचनाओं के जल की गुणवत्ता की जांच भी की जाएगी। जन-जागरुकता के उद्देश्य से 6 जून को प्रत्येक नगरीय निकाय में जल सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। 8 जून को जन भागीदारी से श्रमदान कर जल संरचनाओं की साफ-सफाई की जाएगी। 9 जून को जल संरचनाओं के समीप कलश यात्रा का आयोजन किया जाएगा। साथ ही 9 जून को जल संरक्षण विषय पर निबंध, चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा, जिसमें स्थानीय छात्र-छात्राएं सहभागिता करेंगे। 10 से 16 जून तक योजनानुसार जीर्णोद्धार के साथ-साथ जल संरचनाओं की साफ-सफाई भी होगी। 15 व 16 जून को गंगा दशमी के अवसर पर प्रमुख जल स्त्रोतों के किनारे सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अंतर्गत गंगा आरती, भजन समारोह इत्यादि आयोजित किये जायेंगे। जल स्त्रोतों के संरक्षण, जीर्णोद्धार व उन्नयन कार्यक्रम की निगरानी प्रतिदिन की जायेगी। इस अभियान के दौरान नगरीय क्षेत्रों में निवासरत नागरिकों को रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम के उपयोग के लिए भी प्रोत्साहित किया जाएगा।

बढ़ता तापमान चिंता का विषय है। अभियान के तहत व्यापक जन जागरुकता और जन सहभागिता के साथ जल स्त्रोतों का संरक्षण और वृक्षारोपण होगा। जल स्त्रोतों, हाइवेज, प्रमुख मार्गों सहित पहाड़ियों में क्लस्टर प्लांटेशन किया जाएगा। ड्रिप इरीगेशन और फलदार वृक्षों का रोपण आने वाले समय में एक बड़ी उपलब्धि साबित होगा। इन्दौर संभाग में सभी जिलों में ऐसी जल संरचनाएं है जो प्राचीन समय के परोपकार की भावना को आज भी प्रदर्शित करती हैं। धार के मुंजसागर एवं देवी सागर सहित अन्य तालाबों के संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। बुरहानपुर ज़िले में कुण्डी भंडारा के संरक्षण के लिए प्रयास किए जाएंगे। माण्डू के जहाज महल एवं सागर तालाब के वॉटर मैनजमेंट सिस्टम के जीर्णोद्धार का कार्य किया जाएगा।

धार जिले में मनरेगा से बनी पुरानी जल संरचनाओं में व्यापक पैमाने पर मरम्मत और सुधार का कार्य किया जाएगा। बदनावर में 3 हेक्टेयर क्षेत्र में मियावाकी पद्धति से सघन वृक्षारोपण किया जाएगा। ज़िले में एक वॉट्सएप नंबर जारी किया गया है और विलुप्त हो रहे पोखरों, प्राचीन तालाबों और संकटग्रस्त नदियों की जानकारी ली जा रही है। नालछा और बाघिन नदी में भी कार्य किया जाएगा। झाबुआ जिले में हमारी संस्कृति में पहाड़ों से लोक देवताओं का भी जुड़ाव है। ऐसे में हाथीपावा पहाड़ी के समान अन्य पहाड़ियों पर भी वृक्षारोपण किया जाएगा और जल संरक्षण के लिए जन भागीदारी के लिए कलश यात्रा भी निकाली जाएंगी। अनास नदी के संरक्षण के लिए दीर्घकालीन योजना बनायी जा रही है। आलीराजपुर जिले में आम और नीम के पौधे विशेष तौर पर रोपे जाएंगे। ग्रामीण क्षेत्रों में 245 नये काम चिन्हित किए गए हैं। 05 जून को आलीराजपुर में जल सम्मेलन का आयोजन होगा, जहाँ पर धर्मगुरुओं और सामाजिक संगठनों के प्रमुखों को भी बुलाया जाएगा। सोंडवा में गेस्ट हाउस के सामने की पहाड़ी को पूरा हरा बनाने की मुहिम चलायी जाएगी।

खंडवा शहर में पद्म कुंड, रामेश्वर कुंड और सूरजकुंड की सफाई और संरक्षण का काम होगा, वहीं नागचून तालाब की नहरों में हुए अतिक्रमण को भी हटाया जाएगा। किशोर कुमार की समाधि के निकट स्टॉप डेम बनाया जाएगा। खरगोन ज़िले में बड़वाह और महेश्वर के बीच गंगा खेड़ी गाँव है। जनश्रुति है कि यहाँ पर गंगा माता भी गंगा दशहरा के दिन नर्मदा स्नान के लिए आती हैं। 16 जून को होने वाला प्रमुख कार्यक्रम यहाँ विशेष रूप से आयोजित किया जाएगा। इसी प्रकार धार जिले के मनावर तहसील में स्थित सातपयली में नर्मदा नदी में स्थिति गंगा कुंड के महत्व को भी रेखांकित किया जाएगा। बड़वानी जिले के अंजड़ में सरस्वती पहाड़ी में विशेष वृक्षारोपण किया जाएगा, वहीं जल संसाधन विभाग के समस्त तालाबों और अन्य कार्यों की रूपरेखा बना ली गई है।

इंदौर शहर सहित ज़िले के ग्रामीण अंचल में पुराने जल संरचनाओं में पानी आने के चैनल (स्त्रोतों) को सुधारा जाएगा। इंदौर शहर के विभिन्न तालाबों में पानी के चैनल पर हुए अतिक्रमण को सख्ती से हटाने की कार्यवाही जारी है। कान्ह और सरस्वती नदी में निर्धारित दायरे में हुए अतिक्रमण को चिन्हित कर हटाने की तैयारी की जा रही है। 5 जून को इंदौर ज़िले के हर पंचायतों में होने वाले काम का चिन्हांकन कर लिया गया है। इंदौर जिले में जल हठ अभियान के तहत 56 तालाब चयनित किये गये हैं जहाँ पर काम किया जा रहा है। इंदौर एक ऐसा शहर है जहाँ पर तत्परता से जनसहयोग मिलता है। इंदौर एक शहर है जो कि पर्यावरण के मामले में अपने प्रयासों से मशहूर है। इंदौर ने कई पहल की हैं जो पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण को कम करने के लिए की गई हैं। रालामण्डल, पितृ पर्वत इसके उदाहरण है।

इंदौर ने बाईक शेयरिंग और ई-रिक्शा परिचालन की शुरुआत की गई है। इंदौर ने वेस्ट टू आर्ट की दिशा में बेहतरीन काम करते हुए कई नवाचार किए। विश्राम बाग में करीब 21 टन स्क्रैप से अयोध्या के श्रीराम मंदिर की प्रतिकृति तैयार की गई। 40 फीट लंबी और 27 फीट चौड़ी इस प्रतिकृति को देखने के निहारने के लिए कई देशों के लोग आ चुके हैं। इसके अलावा भी शहर में कई चौराहों को वेस्ट टू आर्ट के जरिए तैयार कलाकृतियों से सजाया गया। सभी 19 जोन में थ्री आर (रीड्यूज रीसाइकिल, रीयूजसेंटर) खोले। इन सेंटरों का उद्देश्य घरों में (पड़ी अनुपयोगी वस्तुओं, सामग्री को किसी के लिए उपयोगी बनाना है। इससे एक तरफ कचरा नियंत्रित करने में मदद मिली, वहीं दूसरी तरफ इस नवाचार से लोगों को काम भी मिला। शहरवासियों ने इन थ्री आर सेंटरों को अच्छा प्रतिसाद दिया। अनुपयोगी इन वस्तुओं का उपयोग कर उपयोगी वस्तुएं तैयार की गईं।

इंदौर ने कई सौर ऊर्जा परियोजनाओं को शुरु किया है जिससे शहर का प्रदूषण कम हो रहा है। इन सभी पहलों के माध्यम से इंदौर ने पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है और दूसरे शहरों को प्रेरित करने के लिए एक मिसाल स्थापित की है। इंदौर जिले में नगर निगम द्वारा मैं हूं झोलाधारी अभियान चालू किया गया है, जिसमें रहवासियों को कपड़े की थैलियां वितरित की जा रही हैं एवं प्लास्टिक की थैलियों को उपयोग ना करने की सलाह दी जा रही है।

विश्व पर्यावरण दिवस

गौरव अवस्थी

खाद्यान्न और भोजन की बर्बादी भी बढ़ा रही है पर्यावरण प्रदूषण

राजस्थान को छोड़कर उत्तर भारत के विभिन्न प्रदेशों में अब औसत तापमान 45-46 डिग्री पहुंच चुका है। इस साल कुछ क्षेत्रों में यह 48-49 डिग्री तक रिकार्ड किया गया। तापमान बढ़ने के पीछे का कारण पर्यावरण प्रदूषण ही है। आमतौर पर पर्यावरण को बिगाड़ने में धुआं उगलने वाले कारखानों, वाहनों, ईंट-भट्ठों आदि धुआं उगलने वाले कारकों का ही अहम रोल माना जाता है। इससे बढ़ने वाली कार्बन डाइऑक्साइड ही ग्लोबल वार्मिंग बढ़ा रही है। इसके लिए सरकारी प्रयत्न चलते रहते हैं लेकिन जागरूकता की कमी से समाज अभी उतना सचेत नहीं है, जितनी तेजी से पर्यावरण प्रदूषण बढ़ रहा है।

बहुत कम लोग इस तथ्य से अवगत होंगे कि खाद्यान्न और भोजन की बर्बादी भी प्रदूषण बढ़ाने की एक महत्वपूर्ण वजह है। आप पूछ सकते हैं कि वह कैसे? इसे जानने के पहले कुछ तथ्यों पर गौर करते हैं। अनाज उत्पादन में भारत वर्ष प्रतिवर्ष तरक्की कर रहा है। वर्ष 2020-21 में रिकार्ड अनाज उत्पादन 315 मिलियन टन हुआ था। 140 करोड़ की आबादी में अनाज उत्पादन का यह रिकॉर्ड अपने आप में उपलब्धि है। सरकारी प्रयासों के चलते इसे बढ़ना ही बढ़ना है लेकिन खाद्यान्न और पके हुए भोजन की बर्बादी भी कम नहीं है। इस बर्बादी में भी भारत काफी आगे है। वैश्विक भूख से सूचकांक में शामिल दुनिया के 125 देश में भारत का भोजन की बर्बादी में 111वां स्थान है।

संयुक्त राष्ट्रीय पर्यावरण कार्यक्रम की खाद्य अपव्यय रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय घरों में प्रतिवर्ष 68 मिलियन टन भोजन बर्बाद होता है। दूसरे शब्दों में प्रति व्यक्ति करीब 55 किलोग्राम खाद्यान्न और भोजन प्रति वर्ष बर्बाद हो रहा है। भोजन अपव्यय के मामले में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। इसमें भारत में होने वाले खर्चीले विवाह समारोहों की प्रमुख भूमिका है। एक रिपोर्ट के अनुसार, शादी समारोह में बना 40 प्रतिशत खाना बर्बाद होता है। शादी खत्म होने के बाद बचा हुआ खाना कूड़े में फेंक दिया जाता है। माना जाता है कि भारत में प्रतिवर्ष बर्बाद होने वाले खाद्यान्न और भोजन से बिहार राज्य को 1 वर्ष तक फ्री में खाना खिलाया जा सकता है।

खाद्यान्न और भोजन के अपव्यय के मामले एक और आंकड़ा जानना जरूरी है। एक स्टडी बताती है कि दिल्ली के 400 सफल रेस्टोरेंट से प्रतिदिन 7.5 टन भोजन प्रतिदिन फेंक दिया जाता है। प्रति आउटलेट यह औसत 18.7 किलोग्राम है। एक शहर के सफल रेस्टोरेंट में अतिरिक्त भोजन का 85 प्रतिशत कूड़े में फेंका जाता है। शेष या तो गरीबों को या फिर जानवरों को खिलाया जाता है।

अब चर्चा करते हैं भोजन की यह बर्बादी पर्यावरण को बिगड़ने में किस तरह सहायक है? एक रिपोर्ट कहती है कि भारत में यह अतिरिक्त खाद्य अपशिष्ट लैंडफिल में समाप्त हो जाता है। इससे शक्तिशाली ग्रीन हाउस गैसें उत्पन्न होती हैं और उनके पर्यावरण पर भयंकर प्रभाव होते हैं। रिपोर्ट कहती है कि अगर यह बचा हुआ खाना भूखे लोगों को खाना खिलाने वाले गैर सरकारी संगठन को दे दिया जाए तो रोज हजारों लोगों का पेट भर सकता है और ग्रीन हाउस गैस पैदा होने से रोकी भी जा सकती है। खाद्य अपशिष्ट में कमी से 2050 तक करीब 90 गीगाटन कार्बन डाइऑक्साइड के समतुल्य उत्सर्जन से भी बचा जा सकता है।

एक दूसरे महत्वपूर्ण कारण पर जापान की चीबा यूनिवर्सिटी में प्रोजेक्ट वैज्ञानिक के रूप में कार्य कर रहे भारतीय मौसम वैज्ञानिक डॉ गौरव तिवारी ध्यान आकृष्ट करते हैं। उनका कहना है कि अनाज उत्पादन में मीठे जल का उपयोग होता है। इसके अलावा डीजल चालित विभिन्न उपकरण खेती में उपयोग में लाए जाते हैं। डीजल पंप से निकलने वाला धुआं कार्बन डाई आक्साइड पैदा करता है। एक किलोग्राम गेहूं की पैदावार में 80 से 90 लीटर पानी उपयोग होता है। यह पानी पीने योग्य होता है। जब किसी शादी समारोह में 10 किलो आटा फेंका जाता है, तब केवल आटा ही बर्बाद नहीं होता। 800 लीटर पानी भी बर्बाद होता है। अब प्रतिवर्ष बर्बाद होने वाले 78 मिलियन टन खाद्यान्न एवं भोजन में पानी की बर्बादी के बारे में जरा सोच कर देखिए!

अब आप सोचिए, भारत में अनाज उत्पादन 315 मिलियन टन है और भोजन खाद्यान्न की बर्बादी करीब 70 मिलियन टन। इस बर्बादी में केवल भोजन की बर्बादी ही नहीं है। अनाज के उत्पादन में खर्च हुए पानी डीजल और अन्य साधनों की बर्बादी भी शामिल है। उनके मुताबिक भोजन की बर्बादी रोकने पर पानी का स्तर भी सुधरेगा। भुखमरी पर भी रोक लगेगी। इसके अलावा ग्लोबल वार्मिंग पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा। इसलिए अगर हम पर्यावरण को शुद्ध रखना चाहते हैं तो कार्बन डाइऑक्साइड पैदा करने वाले जाहिरा कारणों पर ही केंद्रित न रहें। खाना फेंकना 'अन्न देवता' का अपमान तो है ही पर्यावरण प्रदूषण का कारक भी है। इसलिए जरूरी है कि किसी भी रेस्टोरेंट या शादी समारोह में जाए तो थाली में उतना ही खाना परोसें जो हम खा सकते हैं।

डॉ. गौरव तिवारी की इस बात में दम है कि थाली में खाना न बचाना एक बड़ा टास्क है। कभी इस टास्क को हाथ में लेकर तो देखिए। हमारे पूर्वजों का थाली में एक भी अन्न का दाना न छोड़ना अन्न देवता का सम्मान तो था ही उसमें पर्यावरण बचाए रखने का वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी समाहित था। 21वीं सदी में तरक्की करते हुए आज हम धार्मिक रहे न वैज्ञानिक! अगर हम वास्तव में पर्यावरण को बचना चाहते हैं तो विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) से ही यह संकल्प लें कि भोजन की बर्बादी न करेंगे न करने देंगे। पर्यावरण प्रदूषण रोकने में यह हमारा छोटा सा कदम महत्वपूर्ण साबित होगा।

कटाक्ष

प्रदीप मिश्र

लेखक व्यंग्यकार हैं।

क्या से क्या हो गया, देखते-देखते

जेठ के महीने और नौतपा के दिनों में रिकॉर्ड ग्रीष्म ऊर्जा से जीवात्माएं बुरी तरह से प्रभावित हुई हैं। महानुभाव भी इसके प्रकोप से मानसिक तौर पर पड़ने वाले असर से बच नहीं पाए हैं। टीवी धारावाहिक 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' के जेठा लाल की तरह अपने आसपास के जेठा लाल इसकी चपेट में कुछ ज्यादा ही आ गए हैं। इंटरव्यू देकर छा गए हैं। श्रीमान जी बायोलॉजिकल नहीं हैं, ये उन्होंने खुद ही बोला है। जन्म-जन्मांतर का रहस्य खोला है। बताया, इस जहां में उनकी डायरेक्ट एंट्री हुई है। इस पर खूब कमेंट और कमेंट्री हुई है। अब इस पर किसी को कहना है तो कहता रहे कि बात लॉजिकल नहीं है। फिर भी याद रहे। माननीयों के वक्तव्य विचारणीय होते हैं। चरित्र अनुकरणीय होते हैं। खान-पान, रहन-सहन, बोल-चाल, चेहरा-चिंतन स्मरणीय होते हैं। मनुष्य श्रेष्ठ भी इनसे प्रतिस्पर्धा की परिकल्पना नहीं कर सकता। वजह, इन आदरणीयों के पास निराकरणीय कुछ नहीं होता। इसे समझें। कहीं लिखा देखा-अभिमान कहता है कि किसी की जरूरत नहीं है...पर अनुभव कहता है कि समय पर धूल की भी जरूरत पड़ती है...।

355 करोड़ खर्च कर घूमने और डंका बजने के बहाने झूमने वाले जेठा लाल ने बताया है। नए ढंग से कर दी गांधी की व्याख्या है। हिस्ट्री को मिस्ट्री बना दिया। जैसे परीक्षा पे चर्चा में नया फॉर्मूला बताया था। गणितज्ञों को नए शोध का रास्ता सुझाया था। पता लगाना होगा उन्होंने एंटायर पॉलिटिक्स की ही तरह सटायर एंथ्रोपोलॉजी, सोशियोलॉजी या हिस्ट्री की भी डिग्रियां तो नहीं ली हैं। जानकार कहते हैं कि हिस्टीरिया भी होती है। ठीक 'तू चीज बड़ी है मस्त-मस्त...' जैसी। उन्होंने महात्मा गांधी पर फिल्म बनने-बनाने की जानकारी दी है। इशारा है कि अब उनकी बारी है। अभिनेता बनने की चाह है। इसमें दिख रही राह है। खाली होते ही अभिनय की जिम्मेदारी निभाएंगे। कश्मीर फाइल्स, द केरला स्टोरी, द ताशकंद फाइल्स, आर्टिकल 370 और बस्तर फाइल्स की तरह चक्कर चलाएंगे। देश शिक्षा और परीक्षा से ही नहीं चलाए जा सकते हैं। अदम्य इच्छा और अहंकार हो तो किस्म-किस्म के कारनामे दिखाए जा सकते हैं। महत्वाकांक्षा है कि एक अदद 'मुगल-ए-आजम' या 'मदर इंडिया' से रील में अमर हो जाएंगे। जिनसे फिल्म की बात कही है, उनके लिए ये ऑफर है। थोड़े दिन पहले सबने देखा कि वह अच्छे फोटोग्राफर-वीडियोग्राफर हैं। चैनल के लिए ये सनकी की सनसनी हो सकती है। अभी से कोशिश इसलिए, बेरोजगारी में इस आग्रह की अनसुनी हो सकती है। सब कुछ सुनकर ऊपर से बापू ने कहा-हे राम!। इधर हवा में गूंज रहा है-'हाय...मार डाला...।'

इस बारे में एक वरिष्ठ ने दुरुस्त फरमाया। खुद के साथ-साथ दूसरों को भी समझाया। बताया, 1982 में उन्होंने गांधी देखी थी। इससे पहले तक वह नाथूराम को ही जानते थे। अपना सबकुछ मानते थे। कोई बात नहीं। जब जागो तभी सवेरा। पता चल जाता है ये तेरा-ये मेरा। 40 साल बाद दिल की बात जुवां पर क्यों आई है। इसके पीछे कुछ भी नहीं हवा हवाई है। जेठा लाल को गांधी में आंधी का आधार दिख रहा है। गांधी की आंधी नहीं, हवा भी चल गई तो न जाने क्या क्या बदल जाएगा। वैसे जेठा लाल की कुंडली का ही प्रभाव है कि ऋण, रोग और शत्रुओं पर उन्हें विजय मिलती रही है। उन्हें किसी भी स्तर पर ऋण लेने में परेशानी नहीं हुई। विरोधियों को व्याधिग्रस्त कर दिया यानी उनके रोग बढ़ाकर उन्हें शत्रु बना लिया। उनके अपने शत्रु के दूसरों का दोस्त बनने की कहानी अलग है। हाल में वह मंडी गए थे। चूंकि उनका वहां का समय अच्छा गुजरा। इसलिए लौटते ही अगले ही दिन बहुत याद आया मुजरा। आपत्ति है तो बनी रहे। वह नहीं कहने वाले-'हमको....जी माफ करना गलती म्हारे से हो गई...। साफ है कि गिरते-गिरते गिरना सीखो।'

जन-जन में खुशियां लुटाएंगे। जनता जनार्दन इसे नोटिस करेगी। जय-जय के उद्घोष से नहीं डरेगी। यही कारण है कि चमची-चमचों के चेहरों पर चमक है। धंधेबाजों की धमक है। कर्मयोगियों को कसक है। ये सिर्फ एक अकेले की ठसक है। वह अपने ही बूते 'कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा...' तोड़ा, फोड़ा, मोड़ा आदि-इत्यादि कर लेगा। जो खाली झोला है, उसे पूरा का पूरा भर लेगा। बिरादरी के वरिष्ठों को चौथे खंभे के चुनिंदा और चमकदार चेहरों को चमचा-चमची कहने पर पर गंभीर आपत्ति है। वह जानते हैं कि वह उनकी खरीदी हुई संपत्ति है। इसलिए उनके खास लोगों की सलाह है कि चापलूस चलेगा। धन-धान्य का मामला है, मक्खीचूस नहीं चलेगा। भांड की उपाधि गलत नहीं हो सकती। मुजरा जेनुइन है। नौटंकी कहीं से सतही शब्द नहीं है। गुलाम और गुलामी भी असंसदीय नहीं है। एक समय घोषित तौर पर पूरा वंश ही था। अब वह टुकड़ों-टुकड़ों में बिखर गया है। इतिहास के पन्नों में विसर गया है। फिर भी इसका रस और रहस्य ज्यादातर भारतीयों की नस-नस में भर गया है।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लापरवाही

(अक्षय शुक्ला)

ये आग किसने लगाई

1997 में 13 जून की तपती दोपहर, दिल्ली के उपहार सिनेमाघर के बेसमेंट में ट्रांसफॉर्मर फटने से लगी आग में दम घुटने से फिल्म देख रहे 59 लोगों की मौत। 2011, कोलकाता के अस्पताल में लगी आग में दम घुटने से 93 लोग मारे गए। यहां भी बेसमेंट में शॉर्ट सर्किट हुआ और वहां रखे ज्वलनशील पदार्थ के कारण आग ने विकराल रूप ले लिया। 2019, दिल्ली के करोल बाग की एक होटल में लगी आग में 17 लोग मारे गए तो वहीं सूरत के कोचिंग सेंटर अग्निकांड में 15 से 22 साल की उम्र के 22 स्टूडेंट की मौत हो गई। यहां भी आग इमारत के ग्राउंड फ्लोर के एसी में शॉर्ट सर्किट के बाद भड़की। 2022, दिल्ली के मुंडका में चार मंज़िला इमारत में लगी आग में 27 लोग मारे गए।

इंसानी लापरवाही की वजह से हुए इतने हादसों के बाद भी क्या हमने कोई सबक सीखा? जवाब है- नहीं। इसी का नतीजा है कि राजकोट और दिल्ली में एक बार फिर हमने कई मासूमों को खो दिया। राजकोट के गेम ज़ोन में लगी भीषण आग में 9 बच्चों समेत 30 से अधिक लोग मारे गए। 28 लोगों के शव तो इस हालत में हैं कि डीएनए टेस्ट से ही उनकी पहचान हो पाएगी। फायर एनओसी लिए बिना चल रहे इतने बड़े एंटरटेनमेंट पार्क के कंपाउंड में करीब तीन हज़ार लीटर ईंधन अवैध रूप से स्टोर करके रखा था। अंदर आने-जाने का बस एक संकरा रास्ता, इमरजेंसी एग्ज़िट का कोई इंतज़ाम नहीं।

इतने मासूमों की दर्दनाक मौत को हत्या बताते हुए हाई कोर्ट ने यहां तक कह दिया कि यह मैन मेड डिज़ास्टर है और उसे सरकारी तंत्र पर बिलकुल भरोसा नहीं। कोर्ट की यह तल्ख टिप्पणी दिल्ली के चाइल्ड केयर अस्पताल अग्निकांड पर भी सटीक बैठती है। दुनिया ठीक से देखने से पहले ही सात नवजातों की जिस तरह जान गई, उनके परिवारों का दर्द सोचकर भी पीड़ा होती है। आरोप है कि अस्पताल के मालिक के तीन और अस्पताल बिना लाइसेंस के चल रहे हैं। हादसे के बाद हुई पड़ताल में पता चला कि दिल्ली में रजिस्टर्ड 1068 अस्पतालों और नर्सिंग होम में से महज़ 196 के पास ही दमकल विभाग का अनापत्ति प्रमाणपत्र है।

यानी इस अपराध के दोषी अवैध रूप से अपने धंधे चलाने वाले ये लोग ही नहीं, इन्हें परमिशन देने वाले वे ज़िम्मेदार भी हैं, जो जेबें गर्म होने के बाद अपनी आंखें मूंद कर बैठ जाते हैं। क्या उन सभी ज़िम्मेदार अधिकारियों पर मुकदमा नहीं चलना चाहिए, जो जानते हुए भी लोगों की जान से खिलवाड़ होने दे रहे हैं। घनी बस्तियों की संकरी गलियों में अवैध रूप से इतने कारोबार कैसे फल-फूल रहे हैं, जहां बड़ा हादसा होने पर फायरब्रिगेड की गाड़ी तक न घुस पाए।

पिछले साल दिल्ली के मुखर्जी नगर के कोचिंग सेंटर में आग लगने के बाद किस तरह बच्चों ने खिड़की से कूद कर अपनी जान बचाई थी, वो दृश्य सोचकर ही मन सिहर जाता है। घटना के बाद पुलिस ने कोर्ट में बताया कि दिल्ली में चल रहे 500 से अधिक कोचिंग सेंटरों में से महज़ 60 के पास ही फायर एनओसी है। दिखावे की कार्रवाई के तहत सबको नोटिस जारी हो गए। किसी ने भी आदेश पर अमल किया कि नहीं, कोई नहीं जानता। एक बार फिर सभी गेम ज़ोन, होटलों और अस्पतालों की एनओसी की पड़ताल की खानापूर्ति शुरू हो गई है। कुछ दिन तक यह दिखावा चलेगा उसके बाद फिर सब पहले जैसा हो जाएगा, एक नए हादसे के इंतज़ार में। ऊपर व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं।

पर्यावरण

प्रो. नीलिमा गुप्ता

(कुलगुरू, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर)

पर्यावरणीय न्याय की वैश्विक पहल जरूरी

विश्व में होने वाले हालिया पर्यावरणीय परिवर्तन चिंताजनक हैं और ये जलवायु संकट के जारी रहने के संकेत भी हैं। यूएन रिपोर्ट में पिछले वर्ष मौसम से संबंधित अनेकों चरम घटनाएँ दर्ज की गई। पूर्वी अफ्रीका में सूखे के कारण लाखों लोगों को गंभीर खाद्य असुरक्षा का सामना करना पड़ा। पाकिस्तान में रिकॉर्ड तोड़ बारिश के कारण विनाशकारी बाढ़ आई, जिससे लाखों लोग विस्थापित हुए और भारी आर्थिक क्षति हुई। यूरोप में ग्लेशियरों के पिघलने की अप्रत्याशित दर थी और अंटार्कटिक समुद्री बर्फ़ का विस्तार रिकॉर्ड स्तर पर पहुँच गया।

पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने, पर्यावरण के महत्व, पर्यावरण में होने वाले बदलावों के बारे में जागरूक करने तथा पर्यावरण की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए हर साल 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। यह दिवस पर्यावरण संबंधी मुद्दों को संबोधित करने की तत्काल आवश्यकता की याद दिलाता है। इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस की थीम 'भूमि पुर्नस्थापन, मरुस्थलीकरण और सूखे से बचाव' है जिसके लिए 'हमारी भूमि, हमारा भविष्य' है जिसमें इस बात पर जोर है कि हम ही इस पुनर्स्थापना पर कार्य करने वाली महत्त्वपूर्ण पीढ़ी हैं। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) पर्यावरणीय मुद्दों पर अंतर्राष्ट्रीय संवाद और सहयोग के लिए नेतृत्व करता है, जिससे समन्वित प्रयास और वैश्विक स्तर पर अधिक प्रभावी पर्यावरणीय नियमन हो सके। सऊदी अरब इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस की मेजबानी करेगा।

महासागर में फैले माइक्रोप्लास्टिक, प्रशांत महासागर में बढ़ता कचरा, मृत समुद्री जानवरों के पेट से निकलने वाले प्लास्टिक, सीसे से दूषित होता पेयजल, पक्षियों की विलुप्त होती प्रजातियाँ, बड़े पैमाने पर मछलियों की मौत, हीट वेव अलर्ट इत्यादि से संबंधित शोध आधारित खबरें भविष्य में पैदा होने वाले वैश्विक संकट से दुनिया को सोचने पर मजबूर कर रही हैं। पर्यावरणीय गिरावट, प्राकृतिक संसाधनों की कमी, पारिस्थितिकी तंत्र के विनाश और वन्यजीवों के विलुप्त होने के माध्यम से पर्यावरण की जैव विविधता, मानव स्वास्थ्य और जीवन की समग्र गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। इस वर्ष के जनवरी, फरवरी महीने पूर्व वर्षों की तुलना में अब तक के सबसे गर्म महीने थे। पिछले कई वर्षों के तापमान रिकॉर्ड यह बताते हैं कि तापमान वृद्धि की दरों में तेजी आई है। 2023 और 2024 में ही तापमान वृद्धि के बीच का अंतर काफी बड़ा है जो दर्शाता है कि तापमान वृद्धि की दर काफी तेज है।

दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से पर्यावरणीय क्षरण के आँकड़े इकट्ठे किए गए हैं जिनसे भविष्य के संकट की कल्पना की जा सकती है। ग्रेट पैसिफ़िक गार्बेज पैच समुद्री मलबे का एक विशाल संचय है जिसमें प्लास्टिक कचरा होता है जो उत्तरी प्रशांत महासागर में तैरता है। समुद्री जीवन को प्रभावित ही नहीं करता बल्कि समूचे समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र को बाधित करता है। समुद्री भोजन के माध्यम से यह मानव खाद्य श्रृंखला में प्रवेश करता है। अमेजन वनक्षेत्र जिसे पृथ्वी के फेफड़े के रूप में जाना जाता है उसमें अंधाधुन कटाई से जैव विविधता का नुकसान हुआ है। वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में बढ़ोत्तरी का यह महत्वपूर्ण कारक है। लाखों लोगों की आस्था का प्रतीक गंगा नदी औद्योगिक अपशिष्ट, सीवेज और धार्मिक प्रसाद से अत्यधिक प्रदूषित है। नदी पर निर्भर लोगों के स्वास्थ्य के साथ-साथ जलीय जीवन और इसकी पारिस्थितिकी को लगातार नुकसान पहुँच रहा है।

आस्ट्रेलिया के ग्रेट बैरियर रीफ ने जलवायु परिवर्तन से जुड़े समुद्री तापमान में हुई वृद्धि के कारण गंभीर कोरल ब्लीचिंग की घटनाओं का अनुभव किया है। समुद्री जैव विविधता, पर्यटन और मत्स्य पालन पर इससे काफी असर पड़ा है। इसके अलावा चीन में बढ़ता वायु प्रदूषण, वनों की कटाई से अफ्रीकी देशों में बढ़ता मरुस्थलीकरण, नाइजर डेल्टा (नाइजीरिया) में कई दशकों से बड़े पैमाने पर होने वाले तेलों के रिसाव, अमेज़न बेसिन (दक्षिण अमेरिका) में खनन गतिविधियों से लगातार हो रहे भू-क्षरण, इंडोनेशिया के सिटारम नदी में औद्योगिक कचरों के कारण होने वाला प्रदूषण, बढ़ते ग्लोबल वार्मिंग के कारण आर्कटिक की लगातार पिघलती बर्फ जैसे उदाहरण पर्यावरण क्षरण से निपटने के लिए वैश्विक सहयोग और पर्यावरण संरक्षण की नई नीतियों और क्रियान्वयन की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करते हैं। जाहिर है कि इन मुद्दों को वैश्विक फलक तक ले जाने के लिए व्यापक रणनीतियों की आवश्यकता है, जिसमें सख्त नियम, नवीन तकनीकें और समाज के सभी क्षेत्रों की सक्रिय भागीदारी शामिल है। ठोस कार्रवाई करके हम पर्यावरण क्षरण के प्रभाव को कम कर सकते हैं और भविष्य की पीढ़ियों के लिए पृथ्वी की रक्षा कर सकते हैं।

वन्य जीवकोश मे दर्ज आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2023 सबसे गर्म वर्ष था जिसने पिछले रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया और वैश्विक औसत तापमान पूर्व से 1.45 डिग्री सेल्सियस ऊपर पहुंच गया। महासागर लगातार गरम हो रहे हैं और समुद्री जलस्तर में रिकॉर्ड बढ़ोत्तरी हुई जिससे समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र और खाद्य प्रणालियाँ प्रभावित हुईं। कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड का स्तर अभूतपूर्व ऊंचाई पर पहुंच गया।

सारे रिकॉर्ड और आँकड़े पर्यावरणीय परिवर्तन और जलवायु प्रभाव बढ़ते जलवायु संकट को लेकर चेताती हैं। प्रश्न यह है कि वर्तमान परिस्थितियां यदि ऐसी ही बनी रहीं तो पर्यावरण का भविष्य क्या होगा। पर्यावरण का भविष्य कई कारकों पर निर्भर करता है, जिसमें मानवीय गतिविधियाँ, नीतिगत निर्णय, तकनीकी प्रगति और प्राकृतिक प्रक्रियाएँ शामिल हैं। यदि कोई महत्वपूर्ण हस्तक्षेप नहीं किया गया तो 2040 तक महासागरों में प्लास्टिक की मात्रा तीन गुनी हो जाने की उम्मीद है। ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन यदि इसी तरह जारी रहा तो सदी के अंत तक वैश्विक तापमान पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 2 डिग्री सेल्सियस या उससे अधिक बढ़ सकता है। प्राकृतिक वासों के निरंतर विनाश, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और अत्यधिक दोहन से प्रजातियों के विलुप्त होने की दर एक हजार गुना अधिक हो सकती है।

भारत भी वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, वनों की कटाई, भूमि क्षरण, जल की कमी, अपशिष्ट प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन प्रभाव और जैव विविधता की हानि सहित विभिन्न मानवीय गतिविधियों के कारण पैदा हुए पर्यावरणीय संकट का सामना कर रहा है। पर्यावरण क्षरण एक गंभीर मुद्दा है जिसके लिए तत्काल और समन्वित कार्यवाकी की आवश्यकता है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए सख्त पर्यावरण नियमों को लागू करना, संधारणीय प्रथाओं को बढ़ावा देना, जन जागरूकता बढ़ाना, तकनीकी नवाचारों को लागू करना और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना जैसे उपायों पर काम किया जाना चाहिए। भारत की पहल कई मायनों में यहां है जो दुनिया को इस गंभीर संकट से निपटने का रास्ता सुझा सकती है जो सुरक्षित भविष्य की ओर ले जा सकती है।

अपने प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा, प्रदूषण को कम करने और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए भारत में कई प्रमुख पर्यावरण संरक्षण अधिनियम हैं- वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972; जल (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम, 1974; वायु (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम, 1981; पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986; जैविक विविधता (संशोधन) विधेयक 2021 (जैविक विविधता अधिनियम, 2002); वन संरक्षण संशोधन विधेयक 2023 (वन संरक्षण अधिनियम 1980) जो अन्य पर्यावरणीय नियमों और नीतियों के साथ मिलकर भारत में पर्यावरण संरक्षण तथा संरक्षण के लिए कानूनी ढांचा तैयार करते हैं। वे वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए सतत विकास और अपनी प्राकृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति देश की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

पर्यावरण कानून (स्वच्छ वायु अधिनियम, स्वच्छ जल अधिनियम और लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम), अंतर्राष्ट्रीय समझौते (जैसे पेरिस समझौता) और औद्योगिक गतिविधियों का विनियमन (औद्योगिक उत्सर्जन और अपशिष्ट प्रबंधन पर सख्त नियम) जैसी नीतियों का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करने और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए सौर, पवन और जल विद्युत जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के उपयोग को बढ़ावा, रासायनिक उपयोग को कम करने जैसे उपायों को भी शामिल किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभ्यारण्यों के लिए संरक्षण, क्षरित भूमि, वन, आर्द्रभूमि और जलमार्गों के पुनर्वास के लिए पुनरुद्धार परियोजनाएं, लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा के लिए उपायों को लागू करके वन्यजीव संरक्षण, नवीन अपशिष्ट प्रबंधन समाधानों को लागू करके तकनीकी नवाचार अपनाने चाहिए।

पर्यावरण शिक्षा, जन जागरूकता अभियान और सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देना, कार्बन मूल्य निर्धारण तंत्र को लागू करना, वित्तीय प्रोत्साहन और हरित उद्यमिता के लिए समर्थन के माध्यम से हरित परियोजनाओं और टिकाऊ उद्योगों में निवेश को बढ़ावा देना भी इस दिशा में ठोस कदम होगा। बढ़ते शहरीकरण में हरित भवन मानकों को अपनाते हुए स्मार्ट विकास सिद्धांतों के क्रियान्वयन की आवश्यकता है। पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त करने और भविष्य की पीढ़ियों की रक्षा करने के लिए स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक पर सहयोगात्मक रवैये के साथ कार्रवाई आवश्यक है। चुनौतियाँ बहुत बड़ी हैं यदि हम ऐसा करने में सक्षम हैं, तो हम पर्यावरण, समाज और मानवता के साथ न्याय कर रहे होंगे।

पर्यावरण दिवस

चित्रा माली

सहायक प्रोफेसर, गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता।

पर्यावरण और महिलाएं एक-दूसरे के सहचर

द सेकंड सिटीजन'स रिपोर्ट ऑन द एनवायरमेंट दिल्ली, पर्यावरण अध्ययन केंद्र,1987 सीएसई की दूसरी रिपोर्ट जो भारत में पर्यावरण की स्थिति पर जारी की गई थी उसमें उल्लेख किया गया था कि 'ग्रामीण निर्धन महिलाओं को छोड़कर कोई अन्य समूह पर्यावरण के विनाश से इतना प्रभावित नहीं है। निर्धन महिलाओं के प्रत्येक दिन की शुरुआत सूर्योदय के साथ ही ईंधन,चारा तथा पानी की तलाश से होती है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि ये महिलाएं बूढ़ी है, जवान है या गर्भवती है,रोजमर्रा की घरेलू आवश्यकताओं को इन्हें हर हाल में पूरा करना होता है। पर्यावरणीय संकट जैसे जैसे गहराता जाता हैं, इन गरीब महिलाओं की ईंधन की तलाश यात्रा और अधिक लंबी और थकाऊ हो जाती है। लेकिन वर्तमान समय में पर्यावरण के लगातार क्षरण और विनाश से सभी तबके के लोग प्रभावित हो रहे हैं साथ ही इसके प्रतिकूल प्रभाव से वन्य जीवों की कई प्रजातियां लुप्त होने की कगार पर है। रवींद्रनाथ टैगोर का एक लेख 'रॉबरी ऑफ द सॉइल' जो आज से कई वर्षों पूर्व लिखा गया था,वह आज भी प्रासंगिक है। टैगोर का मानना था कि एक उच्चस्तरीय जीवनशैली की जो चाह पहले समाज के एक छोटे हिस्से में ही व्याप्त थी, वह महत्वाकांक्षा के रूप में अब समाज के एक बड़े हिस्से में फैल गई है। इसी के परिणामस्वरूप हर कहीं पानी खत्म हो रहा है,तो कहीं पेड़ों की कटाई हो रही है और धरती लगातार बंजर होती जा रही है। इस पूंजीवादी व्यवस्था ने अधिक उपभोग करने की प्रणाली को जन्म दिया है जो उपभोक्तावादी संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा है। गांधी जी ने इस उपभोक्तावादी पाश्चात्य संस्कृति का लगातार विरोध किया,वे हमेशा अपरिग्रह के सिद्धांत पर चलने के लिए लोगों को प्रेरित करते रहे। गांधी जी ने प्रकृति और मनुष्य के रिश्तों को परस्पर सहयोग के रूप में देखने की दृष्टि प्रदान की जिसमें गांधी जी ने कहा कि 'प्रकृति हर मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है लेकिन किसी भी एक मनुष्य के लालच को पूरा करने में वह असमर्थ है'। इसलिए प्रकृति से आवश्यकता अनुसार ग्रहण किया जाना चाहिए है और इसके एवज में हमें प्रकृति का संवर्धन और संरक्षण करना चाहिए। जो हमारे परस्पर सहयोग और प्रेम पर टिकी व्यवस्था है। गांधी जी के अनुसार सृष्टि के प्रेम का नियम ही ईश्वर का नियम है जो हमें पर्यावरण और जीवजगत से जोड़कर एक दूसरे का सहचर बनाता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण विमर्श की शुरुआत 14 अगस्त 1970 को पृथ्वी दिवस मनाने के बाद विकास की इस प्रणाली पर कई बुनियादी सवालों के साथ शुरू होती है जो संवेदनशील लोगों का ध्यान आकर्षित करती है। 1979 में यूजीनसी हारग्रोव ने 'एनवायरनमेंट एथिक्स' नाम का एक पत्र निकाला जिसमें मानव प्रकृति के संबंधों पर विस्तार से चर्चा की गई। जिसके फलस्वरूप दार्शनिक जगत में भी पर्यावरण और नैतिकी पर विमर्श आरंभ हुआ है। अकादमिक जगत ने भी पर्यावरण को सत्तर के दशक के बाद ही विमर्श में शामिल किया और इस पर गहन अध्ययन किया जाने लगा। इसी दशक में हरित आंदोलनों (ग्रीन मूवमेंट),पर्यावरणीय आंदोलनों,नव सामाजिक आंदोलनों की शुरुआत भी होती है और यही समय नारीवाद की दूसरी लहर का भी है। जिसमें पर्यावरण और स्त्री के संबंधों पर विचार विमर्श का आरंभ हुआ और यह माना गया कि पर्यावरण और स्त्री एक दूसरे की सहचर है,साथ ही दोनों का एक जैसा शोषण और उत्पीड़न का इतिहास है जो पूंजीवादी पितृसत्तात्मक व्यवस्था के द्वारा ही किया जा रहा है। फ्रेंच नारीवादी फ्रैंकोइस डी यूबोन ने 'इकोफेमिनिज्म' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया था जो 1970 से 1980 तक लोकप्रिय बना रहा। सैली मैक फैग जो अमेरिकी पर्यावरणीय नारीवादी है उनका मानना है कि 'भगवान के शरीर के रूप में पृथ्वी की देखभाल की जानी चाहिए'। चीन की मेई एन.जी. ने चीन के विभिन्न हिस्सों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास किया है,और साथ ही पर्यावरण की शिक्षा में महिलाओं को सहभागी बनाने में वे सदैव तत्पर रहीं हैं। वर्ष 2002 में विश्व पर्यावरण दिवस पर मेई को संयुक्त राष्ट्र संघ ने ग्लोबल 500 रोल सम्मान के लिए भी चुना गया था। नोबल पुरस्कार से सम्मानित और ग्रीन बेल्ट आंदोलन की जनक केन्या की वांगरी मथाई ने पर्यावरण संरक्षण और सामुदायिक विकास के लिए 1977 से लगातार प्रयास किए। जिसमें तीस हजार महिलाओं को वन रोपण हेतु प्रशिक्षित भी किया गया जिन्होंने निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों में लाखों वृक्ष लगाने का कार्य किया है। इस प्रशिक्षण ने महिलाओं को पर्यावरणीय शिक्षा के साथ साथ व्यवसायिक रूप से वन संबंधी तकनीकी के संचालन में भी सक्षम बनाया है। जिससे महिलाओं की आर्थिक स्थिति में भी सुधार आया है। अंतरराष्ट्रीय फलक पर अन्य कई नारीवादी पर्यावरणविदों ने पर्यावरण के संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत के संदर्भ में हम पर्यावरण आंदोलन या विमर्श की शुरुआत को चिपको आंदोलन के रूप में देख सकते हैं जो प्रारंभ में एक शराब विरोधी आंदोलन था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के बाद सबसे बड़ी संख्या में महिलाओं ने इसमें भागीदारी के साथ साथ नेतृत्व भी किया था। पर्यावरणीय आंदोलन की खास बात यह है कि यह अहिंसक प्रतिरोध में यकीन करते हैं तथा इन आंदोलनों में महिलाओं की संख्या अधिक रहती है। इसी के साथ यह अहिंसक आंदोलन नए नारों और प्रतिरोध के नए तरीकों को ईजाद कर लेते हैं। चिपको आंदोलन का नेतृत्व गौरा देवी और बचनी देवी के द्वारा किया गया था। जिसमें पर्यावरण का सामान्य जन जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है और हमारी दैनिक जीवनचर्या का यह कैसे अभिन्न हिस्सा है यह बताने का प्रयास किया गया था। वनों के संरक्षण के लिए महिलाओं ने वृक्षों को आलिंगन कर बचाया था,इसी से इस आंदोलन का नाम चिपको आंदोलन पड़ा था। भारत में इसके पूर्व भी पर्यावरण संरक्षण के लिए 1730 में अमृता देवी ने खेजड़ी के वृक्षों को बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी,उनके साथ साथ उनकी दो बेटियों ने भी अपनी मां के साथ प्राणों का बलिदान दिया था। इस आंदोलन में 69 महिलाओं ने वृक्षों को बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी। चिपको आंदोलन में महिलाओं ने अधिकारियों को दिन के उजाले में लालटेन दिखलाई थी यह प्रतीकात्मक था कि उन्हें जंगल के उपकार नज़र नहीं आ रहे हैं जो सभी के जीवनदाता है इसमें कई नारों का प्रयोग किया गया था जिसमें से एक था 'क्या है जंगल के उपकार मिट्टी, पानी,और बयार÷ इसी तरह हर शांतिमय प्रतिरोध नए नए नारों और तरीकों को अपने आंदोलन में शामिल कर लेता है। इसी आंदोलन से जुड़ी वंदना शिवा देश विदेश की जानी मानी इको फेमिनिस्ट है,आप प्रारंभ से ही चिपको आंदोलन से जुड़ी रहीं हैं और दशकों से पर्यावरणीय आंदोलनों को जानने समझने की कोशिश कर रहीं हैं, उसी क्रम में कई महत्वपूर्ण किताबों का लेखन भी किया है। वंदना शिवा के अनुसार वर्तमान समय में एक नए तरह युद्ध चल रहा है जो जमीन और उसकी उर्वरता के विरुद्ध है,इसके अस्त्र उर्वरकता को बढ़ाने वाले रसायन और कीटनाशक है जो जन -विनाशक हैं। ग्रीन इकोनॉमी की अवधारणा हमें प्रकृति के बाजारीकरण की ओर ले जा रही है,फिर चाहे जमीन का ऊपरी भाग हो या जमीन का भीतरी भाग,पानी या खनिज संपदा। इसी क्रम में भारत में पर्यावरण संसाधनों पर कॉरपोरेट जगत के वर्चस्व को देखा जा सकता है। वंदना शिवा के अनुसार 'महिलाओं में पृथ्वी के समान ही उत्पन्न करने की सृजनात्मक क्षमता होती है। जिससे वह पर्यावरणीय संरक्षण और संवर्धन के संसाधनों,नीतियों और प्राकृतिक तरीकों का ज्ञान सहज ही प्राप्त कर लेती है'। वर्तमान में वंदना शिवा नवदान्य आंदोलन में सक्रिय हैं और जैविक खेती,जैविक खाद व जैविक बीजों के साथ साथ जमीन के संरक्षण के लिए प्रयासरत हैं। इसमें महिलाओं को भी प्रशिक्षित करने का कार्य किया जा रहा है जिससे वह आर्थिक रूप से सक्षम बन सकें। नर्मदा नदी भारत की प्रमुख नदियों में से एक है। यह नदी भारतवासियों की आस्था और विश्वास का प्रतीक है जो अपनी पूरी लंबाई में,एक हज़ार किलोमीटर तक सतपुड़ा पर्वतमाला की घाटियों के बीच होकर गुजरती है। सतपुड़ा की पहाड़ियां पूरब से पश्चिम तक भारत को उत्तर भारत और दक्षिण भारत ऐसे दो भागों में विभाजित करती है। नर्मदा के उद्गम स्थल अमरकंटक समेत इस पर्वतमाला की दुर्गम घाटियों में अनेक मंदिर और तीर्थ स्थल हैं जो सदियों से भारत के अन्य क्षेत्रों से तीर्थयात्रियों को आकर्षित करते रहते हैं। आज़ादी के बाद जब बांधों को विकास के पर्याय के रूप में देखा जाने लगा तो देश की 30 बड़ी नदियों पर बड़े बांधों की परियोजनाओं का प्रारंभ हुआ जिसमें नर्मदा नदी की पूरी घाटी में 100 से अधिक छोटे बड़े बांधों के निर्माण की विशालकाय परियोजनाएं बनाई गईं। मध्यप्रदेश में सबसे अधिक नर्मदा नदी पर बांधों का निर्माण किया गया है। जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरण और विस्थापन की समस्या से बचने के लिए नर्मदा बचाओ आंदोलन का जन्म हुआ था। नर्मदा बचाओ आंदोलन के द्वारा विकास की इस अवधारणा के खिलाफ 250 जनसंगठनों के प्रमुखों ने 1989 में एकजुट होकर मानव श्रृंखला बनाकर बड़े बांधों के विरोध में प्रदर्शन किया था तथा कुछ वर्ष पूर्व 'जल सत्याग्रह' भी किया गया था। इस आंदोलन में आदिवासी समुदाय के लोगों ने अधिक संख्या में भाग लिया तथा मध्यप्रदेश से लेकर दिल्ली तक वे हर प्रदर्शन में शामिल रहे। क्योंकि उनका कहना था हम नर्मदा नदी के किनारे के किसान पीढ़ियों से इसी जमीन, जंगल, जल के सहारे जीते आए हैं,यह हमारी संस्कृति परंपरा का अभिन्न हिस्सा है जिससे हम अलग नहीं हो सकते हैं। इसी संस्कृति अधिकार के संबंध में जब भारतीय संविधान में 44वाँ संविधान संशोधन किया गया जिसमें संपत्ति के अधिकार को हटा दिया गया था जिसका तात्कालिक विरोध विद्वान छत्रपति सिंह के द्वारा किया गया था,उनका यह मानना था कि यह कदम आदिवासी समूहों के पक्ष में नहीं है क्योंकि अब सरकार द्वारा अपनी ज़मीन या संसाधन के अधिग्रहण को वे अपने मौलिक अधिकारों के उल्लंघन के रूप में नहीं पेश कर सकते हैं। इन विशालकाय परियोजनाओं का यह परिणाम है कि इनसे विस्थापित लोगों की कुल संख्या में चालीस प्रतिशत केवल आदिवासी समुदाय के लोग हैं। जो अपनी संस्कृति परंपरा और जीविका के साधनों से विमुख होकर जीवन जीने को विवश हैं। नर्मदा बचाओ आंदोलन ने विश्व बांध आयोग की रिपोर्ट का हवाला भी दिया गया था कि भारत और चीन की जलवायु बड़े बांधों के अनुकूल नहीं है। लेकिन हमारे यहां के एक बड़े तबके ने इन सब तर्कों को अनसुना करते हुए नर्मदा बचाओ आंदोलन को ही विकास विरोधी ठहरा दिया था। जबकि मेधा पाटकर लगातार छोटे बांधों को बिजली उत्पादन के विकल्प के रूप में प्रस्तुत कर रही थीं जो पर्यावरण और मानवों के अनुकूल है। उदाहरण के लिए शाहरुख खान की फ़िल्म 'स्वदेश' में इस प्रयोग को देखा जा सकता है। उत्तराखंड में भी बिजली उत्पादन के लिए छोटे बांधों और पनबिजली का उपयोग किया जाता रहा है। ऐसे और भी कई आंदोलन है जो लगातार जल,जंगल,और जमीन के लिए संघर्षरत हैं। इनमें कुछ प्रमुख आंदोलन श्री काकुलम आंदोलन, बोध गया का भूमि आंदोलन, गन्धमर्दन आंदोलन,अप्पिको आंदोलन, चिलका झील आंदोलन, झारखंड का पोटका आंदोलन,महाराष्ट्र के जैतपुर में आणविक संयंत्र के लिए भूमि अधिग्रहण के खिलाफ, उड़ीसा में वेदांता कंपनी द्वारा बॉक्साइट खनन के खिलाफ,बंगाल के नंदीग्राम में सेज के खिलाफ आंदोलन और भी कई छोटे बड़े आंदोलनों को इसमें जोड़ा जा सकता है। इन सभी आंदोलनों की खासियत यह थी कि इनमें महिलाओं का प्रतिनिधित्व व संख्या अधिक थी तथा यह अहिंसक गांधीवादी आंदोलन कहे जाते हैं। नारीवाद की दूसरी लहर वैश्विक बहनापे (sister Hood) की बात करती है,इन आंदोलनों ने स्थानीय स्तर पर बहनापे को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आंदोलनों को आगे बढ़ाने में मीडिया की भी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है,इसी के चलते जब इन आंदोलनों से कोई सेलिब्रिटी जुड़ती है तो वह मैन स्ट्रीम में आ जाते हैं बाकी धीमी गति से संचालित होते रहते हैं। इकोफेमिनिज्म की पूरी धारा पर्यावरण के संरक्षण के लिए परंपरागत संस्कृति के अनुरूप आने वाली पीढ़ियों के लिए पर्यावरण को संजोने का कार्य करती हैं ठीक उसी तरह जिस तरह वह अपने परिवार की धरोहर को अपनी पीढ़ी को सौंपती है। इको फेमिनिज्म की यह धारा भी आलोचना से परे नहीं है जो पर्यावरण और स्त्री के गुणों में जैसे प्रेम,सद्भाव, सहयोग, सहनशीलता, त्याग,व स्वभाव की समानता बात करती है,इसी आधार पर इकोफेमिनिज्म की आलोचना की जाती है कि यह गुण सिर्फ स्त्रियों में ही नही होते पुरुषों में भी होते क्योंकि यह मानव स्वभाव है,ये गुण कम या ज्यादा मात्रा में हो सकते है। वर्तमान में बढ़ते हुए तापमान से हम सभी त्रस्त है इससे निजात पाने के लिए हमें पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन के लिए पारंपरिक व टिकाऊ साधनों व उपायों को अपनाना होगा। तभी पृथ्वी हमारे और वन्यजीवों के रहने के लिए अनुकूल हो पाएगी। यह महज एक दिन पर्यावरण दिवस मनाने से संभव नहीं होगा इसके लिए लगातार हर दिन प्रयास करते रहना होगा।

पर्यावरण दिवस

मनोज कुमार

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में एडजंक्ट प्रोफेसर हैं)

विश्व पर्यारण दिवस पर गांधीजी का संदेश

'पृथ्वी, वायु, भूमि तथा जल हमारे बच्चों की धरोहर है'

पर्यावरण प्रदूषण वैश्विक संकट बनकर हमारे सामने खड़ा है. ज्यों-ज्यों हम विकास की ओर बढ़ रहे हैं, त्यों-त्यों पर्यावरण प्रदूषण और भी गंभीर होता जा रहा है। हमारी भोगविलासिता और लापरवाही के चलते पर्यावरण संकट में है। यह संकट विश्व के साथ भारत पर भी मंडरा रहा है। प्रति वर्ष विकराल गर्मी इस बात का संकेत है कि पृथ्वी अब हमारा बोझ सहन नहीं कर पा रही है और हम वैकल्पिक उपायों की ओर बढ़ रहे हैं जो पर्यावरण को बचाने में अक्षम है। पर्यावरण संकट को संयुक्त राष्ट्र संघ ने पांच दशक से पहले चिन्ह लिया था और विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का फैसला किया। 1972 में संयुक्त राष्ट्र के इस फैसले बरक्स पूरी दुनिया में पांच जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट संघ ने विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का फैसला लिया था लेकिन पर्यावरण दिवस सबसे पहले स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में मनाया गया। वर्ष 1972 में स्वीडन के शहर स्टाकहोम में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा विश्व का पहला अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें 119 देशों ने संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यू.एन.ई.पी) का प्रारंभ 'एक धरती' के सिद्धांत को लेकर किया और एक 'पर्यावरण संरक्षण का घोषणा पत्र' तैयार किया जो 'स्टाकहोम घोषणा' के नाम से जाना जाता है।

पर्यावरण शब्द परि+आवरण से मिलकर बना है। 'परि' का आशय चारों ओर तथा 'आवरण' का अर्थ परिवेश से है। चूंकि पर्यावरण में वायु जल भूमि पर पौधे जीव जंतु मानव और इनकी गतिविधियों का समावेश होता है। इसलिए पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण का ध्यान रखना हमारा नैतिक दायित्व बनता है। महात्मा गांधी का मानना था कि पृथ्वी, वायु, भूमि तथा जल हमारे पूर्वजों से प्राप्त सम्पत्तियां नहीं हैं। वे हमारे बच्चों की धरोहरें हैं। वे जैसी हमें मिली हैं वैसी ही उन्हें भावी पीढ़ियों को सौंपना होगा। वन्य जीवन, वनों में कम हो रहा है किन्तु वह शहरों में बढ़ रहा है। गांधीजी कहते थे 'हमारी आवश्यकता की पूर्ति के लिए इस पृथ्वी पर पर्याप्त संसाधन हैं मगर हमारे लालच के लिए नहीं हैं।'

वर्तमान समय में पानी, हवा, रेत मिट्टी आदि के साथ-साथ पेड़ पौधे, खेती और जीव जंतु आदि सभी पर्यावरण प्रदूषण से प्रभावित हो रहे हैं। कारखाने से निकलने वाले अपशिष्टों, परमाणु संयंत्रों से बढ़ने वाली रेडियोधर्मिता, मल के निकास आदि कई सारे कारणों से लगातार पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन प्रदूषण रोकने के लिए अनेक उपाय लगातार कर रहा है। औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण हरे भरे खेत, भूमि का जलवायु, वन्य जीव का स्वास्थ्य, भूस्खलन आदि प्रभावित हो रहे हैं। इसी को मद्देनजर रखते हुए बड़े उद्योगों को प्रदूषण रोकने के उपाय अपनाने के लिए कहा जा रहा है सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट लगाए जा रहे हैं और ज्यादा से ज्यादा वृक्षारोपण कार्यक्रम में ध्यान दिया जा रहा है यह सब प्रयास पर्यावरण को संतुलित और सुरक्षित रखने के लिए नियंत्रण किए जा रहे हैं इसीलिए 5 जून को हर वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है। भूमि जल एवं वायु आदि तत्व में विकृति आने से पर्यावरण का संतुलन बिगड़ जाता है तब पर्यावरण लगातार प्रदूषित होने लगता है। इसी को कम करने या रोकने की प्रक्रिया को पर्यावरण संरक्षण कहते हैं। धरती पर लगातार जनसंख्या बढ़ने तथा पर्यावरण के प्रति जागरूकता ना होने के कारण पर्यावरण संरक्षण की समस्या लगातार उत्पन्न हो रही है। पर्यावरण संरक्षण का विश्व के सभी नागरिकों तथा प्राकृतिक परिवेश से गहरा संबंध है। पर्यावरण संरक्षण को लेकर सन् 1992 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा ब्राजील में विश्वभ्र के 174 देशों का पृथ्वी सम्मेलन आयोजित किया गया था। फिर सन 2002 में जोहान्सबर्ग में पृथ्वी सम्मेलन आयोजित किया गया जिसका उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण था।

पर्यावरण संरक्षण के लिए पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले कारणों पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। जनजीवन की सुरक्षा के लिए पर्यावरण को सुरक्षित और संरक्षित रखने की जरूरत है। आधुनिकता की ओर बढ़ रहे विश्व में विकास की राह में कई ऐसी चीजों का उपयोग शुरू कर दिया है, जो धरती और पर्यावरण के लिए घातक है। इंसान और पर्यावरण के बीच गहरा संबंध है। प्रकृति के बिना जीवन संभव नहीं है। लेकिन इसी प्रकृति को इंसान नुकसान पहुंचा रहा है। लगातार पर्यावरण दूषित हो रहा है, जो जनजीवन को प्रभावित करने के साथ ही प्राकृतिक आपदाओं की भी वजह बन रहा है।

यह राहत की बात है कि एक तरफ पर्यावरण प्रदूषण बढ़ रहा है तो उसे बचाने के प्रयास भी सतत रूप से चल रहा है। लगभग पाँच दशकों से, विश्व पर्यावरण दिवस जागरूकता बढ़ा रहा है, कार्यवाही का समर्थन कर रहा है और पर्यावरण के लिए बदलाव ला रहा है। लोगों में जागरूकता बढ़ाने के लिए हर वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस पर विशेष थीम के साथ काम किया जाता है जो दुनिया को एक संदेश देता है। 2005 के विश्व पर्यावरण दिवस की थीम 'ग्रीन सिटीज' थी और नारा था 'प्लांट फॉर द प्लैनेट।' 2006 का विषय था मरुस्थल और मरुस्थलीकरण और नारा था 'शुष्क भूमि को मरुस्थल न बनाएं।' नारे ने शुष्क भूमि की रक्षा के महत्व पर बल दिया। 2007 के विश्व पर्यावरण दिवस का विषय था 'मेल्टिंग आइस - ए हॉट टॉपिक।' अंतर्राष्ट्रीय ध्रुवीय वर्ष के दौरान, विश्व पर्यावरण दिवस 2007 ने उन प्रभावों पर ध्यान केंद्रित किया जो जलवायु परिवर्तन के कारण ध्रुवीय पारिस्थितिक तंत्र और समुदायों पर व दुनिया के अन्य बर्फीले और बर्फ से ढके क्षेत्रों पर हो रहे हैं और जिनका वैश्विक प्रभाव पड़ रहा है। मिस्र ने 2007 विश्व पर्यावरण दिवस के लिए डाक टिकट जारी किया। इन प्रयासों के बाद भी पर्यावरण प्रदूषण से मुक्ति पाने के लिए या उसमें अपेक्षित सुधार लाने के लिए विशेष प्रयास वैश्विक स्तर पर किए जाने की आवश्यकता प्रतीत होती है। महात्मा गांधी हमेशा से पर्यावरण प्रदूषण की चिंता करते रहे हैं. अपने लेखों और भाषणों में वे इस बात की ताकीद करते रहे हैं कि यदि पर्यावरण संरक्षित नहीं किया गया तो जीवन समाप्त हो जाएगा। इसलिए उन्हें विश्व का पहला पर्यावरणवादी कहा जाए तो उचित ही होगा। गांधी जी ने हिमालय के महत्व को भी उसी समय रेखांकित कर प्रकृति से अनावश्यक छेड़छाड़ न करने की नसीहत दे दी थी। भारत में भी पर्यावरण की रक्षा के लिए चिपको जैसे प्रमुख आंदोलनों के प्रणेता चंडी प्रसाद भट्ट और उसे व्यापक प्रचार देने वाले सुंदर लाल बहुगुणा और बाबा आमटे तथा मेधा पाटकर ने गांधी से ही प्रेरणा ली।

'हिन्द स्वराज' में प्रकट की थी पर्यावरण की चिंता गांधी जी ने आधुनिक पर्यावरणविदों से बहुत पहले दुनिया को बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण की समस्याओं के बारे में आगाह किया था। गांधी जी ने कल्पना की थी कि मशीनीकरण से न केवल औद्योगीकरण, बड़े पैमाने पर शहरीकरण, बेरोजगारी होगी, बल्कि पर्यावरण का विनाश भी होगा। एक सदी पूर्व 1909 में लिखी गई उनकी पुस्तक, ''हिंद स्वराज'' ने पर्यावरण के विनाश और ग्रह के लिए खतरे के रूप में दुनिया के सामने आने वाले खतरों की चेतावनी दी थी। ऐतिहासिक रिकॉर्ड के रूप में, गांधी जी पर्यावरण प्रदूषण और मानव स्वास्थ्य के लिए इसके परिणामों से पूरी तरह अवगत थे। वह विशेष रूप से उद्योग में काम करने की भयावह परिस्थितियों के बारे में चिंतित थे, जिसमें श्रमिकों को दूषित, जहरीली हवा में सांस लेने के लिए मजबूर किया जाता था। उन्होंने 5 मई, 1906 को इंडियन ओपिनियन में उन चिंताओं को व्यक्त किया और कहा था कि ''आजकल, खुली हवा की आवश्यकता के बारे में प्रबुद्ध लोगों में सराहना बढ़ रही है।'' गांधी जी का मानना था कि पृथ्वी, वायु, भूमि तथा जल हमारे पूर्वजों से प्राप्त सम्पत्तियां नहीं हैं। वे हमारे बच्चों की धरोहरें हैं। वे जैसी हमें मिली हैं वैसी ही उन्हें भावी पीढ़ियों को सौंपना होगा। वन्य जीवन, वनों में कम हो रहा है किन्तु वह शहरों में बढ़ रहा है। 1909 की शुरुआत में ही उन्होंने अपनी पुस्तक ''हिंद स्वराज'' में मानव जाति को अप्रतिबंधित उद्योगवाद और भौतिकवाद के प्रति आगाह किया था। वह नहीं चाहते थे कि भारत इस संबंध में पश्चिम का अनुसरण करे और चेतावनी दी कि यदि भारत अपनी विशाल आबादी के साथ पश्चिम की नकल करने की कोशिश करता है तो पृथ्वी के संसाधन पर्याप्त नहीं होंगे। उन्होंने 1909 में भी तर्क दिया कि औद्योगीकरण और मशीनों का लोगों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। हालांकि वह मशीनों के विरोध में नहीं थे। उन्होंने निश्चित रूप से बड़े पैमाने पर मशीनरी के उपयोग का विरोध किया। उन्होंने नदियों और अन्य जल निकायों को प्रदूषित करने के लिए लोगों की आलोचना की। उन्होंने धुएं और शोर से हवा को प्रदूषित करने के लिए मिलों और कारखानों की आलोचना की।

फिर हुई कामथ तिराहे पर दुर्घटना, डिवाइडर पर चढ़ी बोलोरो कार, बड़ा हादसा टला

बैतूल/मुलताई। मुलताई नगर की सीमा से लगे ग्राम कामथ का नागपुर छिंदवाड़ा मुलताई तिराहा जिसे दुर्घटनाओं के लिए जाना जाता है। यहा बीती रात फिर एक बुलोरो कार दुर्घटनाग्रस्त होने की खबर है। घटना के संबंध में बताया गया कि छिंदवाड़ा

से मुलताई की ओर आ रही बोलोरो कार डिवाइडर पर चढ़ गई। हालांकि जानमाल की कोई नुकसान ही नहीं हुई है किंतु घटना के गवाह लोगों ने बताया कि यहां गंभीर हादसा हो सकता था। हालांकि वाहन चालक द्वारा वाहन को नियंत्रित कर लिया गया था, अन्यथा बड़ा हादसा हो सकता था। बताया जा रहा है की बोलेरो वाहन जो की छिंदवाड़ा की ओर से मुलताई की ओर आ रहा था। अचानक से तेज बारिश के कारण उसे सामने बीच रोड पर डिवाइडर दिखाई नहीं दिया और वह डिवाइडर पर चढ़ गया। हालांकि बोलेरो वाहन छतिग्रस्त जरूर पहुंची लेकिन कोई हताहत नहीं हुआ और बड़ा हादसा टल गया। बारिश होने के बाद वहां मौजूद आसपास लोगों द्वारा वाहन को डिवाइडर से हटाकर रवाना कर दिया गया।

बारिश के बाद खिली धूप से बढ़ी उमस

बैतूल। कल दोपहर बाद हुई बारिश से मौसम में उमस घुल गई है। आज मंगलवार को तेज धूप खिलने से लोगों को पसीना पोछते हुए परेशान होना पड़ा। कल जिले के कई क्षेत्रों में आज आधा से एक घंटा तेज बारिश ने मौसम में ठंडक घोल दी थी लेकिन इसके बाद उमस से लोग परेशान हुए। बैतूल, बैतूल बाजार, चिचोली, घोड़ाडोंगरी समेत कई इलाकों में आसमान पर बादल छाने के बाद बादल जमकर बरसे। इससे कल दिन भर रहे तेज तापमान के बाद लोगों ने राहत महसूस की है।

कल बारिश होने से बैतूल में तापमान 40.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। शाम होते होते आसमान पर बादल छाने लगे, जिसने बारिश का रूप लेते हुए बरसना शुरू कर दिया। बादलों की गड़गड़ाहट के साथ तेज हवाएं भी इस दौरान चली। चिचोली में करीब एक घंटा बारिश हुई जबकि घोड़ा डोंगरी, बैतूल बाजार में भी बादल जमकर बरसे। इसने वातावरण में ठंडक घोल दी है।

रविवार नौतपा के खत्म होने के बाद बदले मौसम से लोग राहत महसूस कर रहे है। जिले के कई क्षेत्रों में भी मौसम बरसाती बना हुआ है। अनुमान है की कई क्षेत्रों में भी बारिश दर्ज की जा सकती है। सोमवार को हुई बारिश के साथ चली तेज हवा से आम की फसल को नुकसान हुआ है। कई क्षेत्रों में आम के पेड़ों पर लगे आम तेज हवा के कारण गिर पड़े है। आसमान पर जिस तरह बादलों की जमावट है। उससे इसके देर तक बरसने की संभावना है।

प्रोग्रेसिव पेंशनर्स एसोसिएशन की मासिक बैठक आज 5 जून को

बैठक में हृदय रोग जागरूकता शिविर का होगा आयोजन

हृदय रोग विशेषज्ञ हृदय रोग से संबंधित बचाव, सुरक्षा, निदान और सावधानियों पर मार्गदर्शन देंगे

बैतूल। प्रोग्रेसिव पेंशनर्स एसोसिएशन बैतूल की नियमित मासिक बैठक आज 5 जून 2024 को 11 बजे से इटारसी रोड स्थित सुंदर लाल कड़वे निवास पर आयोजित की जाएगी। इस बैठक में संगठन के लम्बित प्रकरणों के निराकरण हेतु विभागीय अधिकारियों से भेंट करने और फोरम की बैठक हेतु जिला अधिकारी से संपर्क करने पर विचार किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, जुलाई माह की वेतन वृद्धि हेतु न्यायादेश के साथ विभागीय अधिकारियों को आवेदन पत्र देने पर भी चर्चा होगी। अन्य तात्कालिक बिंदुओं पर भी बैठक में विमर्श किया जाएगा। अध्यक्ष रामचरण साहू ने बताया कि इसी दिन 2 बजे से 3 बजे तक सिम्स अस्पताल के संचालक एवं हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. श्याम सोनी बुजुर्ग पेंशनर्स के लिए हृदय रोग से संबंधित बचाव, सुरक्षा, निदान और सावधानियों पर मार्गदर्शन देंगे। इस हृदय रोग जागरूकता शिविर में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर लाभ प्राप्त करने की अपील की गई है।

सजायाफ्ता की फोटो लगाने के क्या मायने..?

नर्मदापुरम। भारतीय जनता पार्टी के चुनाव चिन्ह पर विजयी हुए दर्शन सिंह चौधरी की जीत पर लगाएं गए होर्डिंग्स चर्चा का विषय बन गया। पिपरिया के जिस नवनीत सिंह को न्यायालय ने दोषी करार देते हुए 7 साल सश्रम कारावास ओर अर्थदंड से दंडित किया है की तस्वीर हर फ्लेक्स में लगाकर पूछा जा रहा है भाजपा क्या मेसेज देना चाह रही है

बैतूल-हरदा-हरसूद लोस से भाजपा के डीडी उईके ने अपना ही रिकॉर्ड तोड़ा

कांग्रेस प्रत्याशी रामू टेकाम को 3 लाख 79 हजार 761 वोटों से किया पराजित

संजय द्विवेदी, बैतूल। पूरे देश में भले ही भाजपा को झटका लगा हो लेकिन मध्यप्रदेश में भाजपा ने कांग्रेस का पूरी तरह सूपड़ा साफ करते हुए सभी 29 सीटों पर जीत हासिल की है। इसी तारतम्य में मंगलवार को हुई मतगणना में 20 राउंड की गिनती के बाद बैतूल-हरदा-हरसूद लोकसभा सीट पर भाजपा के दूसरी बार के प्रत्याशी डीडी उइके ने 2019 का अपना ही रिकार्ड तोड़ते हुए 3 लाख 62 हजार के अपने पुराने रिकार्ड को तोड़ते हुए 3 लाख 79 हजार 761 का नया रिकार्ड बनाया। अभी तक के बैतूल संसदीय क्षेत्र के इतिहास में यह भाजपा प्रत्याशी की सबसे बड़ी जीत मानी जा रही है। पिछली बार की तुलना में वोटिंग प्रतिशत कुछ कम होने के बाद भी भाजपा की यह रिकार्ड तोड़ जीत बताती है कि संगठन ने अपनी मजबूती से कमलनाथ के मुख्य सिपहसलार कांग्रेस के रामू टेकाम को लगातार दूसरी बार करारी शिकस्त दी हैं और बैतूल संसदीय क्षेत्र के इतिहास में भाजपा प्रत्याशी की सबसे बड़ी जीत मानी जा सकती है। भाजपा प्रत्याशी ने अपनी जीत को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा संगठन के कार्यकर्ताओं को समर्पित की है। गौरतलब है कि बैतूल हरदा हरसूद लोकसभा क्षेत्र के तीन विधानसभा क्षेत्र हरदा , टिमरनी की काउंटिंग हरदा में और हरसूद विधानसभा क्षेत्र की मतगणना खंडवा जिले में हुई है।

जेएच कालेज बैतूल में बेहद ही चौक चौबंद सुरक्षा व्यवस्था के साथ काउंटिंग प्रक्रिया शुरू हुई और संपन्न भी हुई । सुबह 8 बजे काउंटिंग के शुरूआती दौर में ही भाजपा ने बढ़त बनानी शुरू कर दी थी। यह बढ़त देखते ही देखते 12 राउंड के बाद लाखों में पहुंच गई थी। चुनाव में निर्दलीय प्रत्याशियों सहित 8 उम्मीदवार मैदान में थे। खास बात यह है कि 5 उम्मीदवार जहां 4 अंकों के साथ राउंडवार बढ़त लेते रहे, वहीं मतदाताओं ने नोटा का भी जमकर उपयोग किया है। नोटा 5 अंकों के साथ चौथे नम्बर पर रही। इस बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि चुनावी मैदान में उतरे भाजपा, कांग्रेस समेत अन्य प्रत्याशियों को लोगों ने पसंद नहीं किया।

डाक मतपत्रों के साथ शुरू हुई वोटों की गिनती- सुबह 8 बजे जेएच कालेज में जिला निर्वाचन अधिकारी नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी की अगुवाई में डाक मतपत्रों की गिनती के बाद कड़ी सुरक्षा के बीच स्ट्रांग रूम खोला गया और ईवीएम मशीनें काउंटिंग रूम तक पहुंचाई गई। डाक मत पत्रों की गिनती के तत्काल बाद ईवीएम मशीनों से वोटों की गिनती शुरू की गई। भाजपा के सांसद प्रत्याशी की जीत का पहला रुझान ही वोटों की बढ़त के साथ सामने आया। डीडी उइके को जहां 5215 वोट हासिल हुई तो कांग्रेस प्रत्याशी रामू टेकाम को महज 2366 मत प्राप्त हुए। पहले ही रुझान में डीडी उइके ने 2849 मतों की बढ़त बना ली थी। इसके बाद से ही श्री उइके ने क्रमवार बढ़त बनानी शुरू कर दी थी, आखरी राउंड तक बरकरार थी।

शरूआती दौर से ही बढ़त बनाकर चल रहे- भाजपा प्रत्याशी डीडी उइके को दोपहर 2 बजे तक कुल 3 लाख 35 हजार 199 मतों की बढ़त प्राप्त हो चुकी थी। श्री उइके को 7 लाख 27 हजार 427 वोट मिल चुके थे। इसके मुकाबले कांग्रेस प्रत्याशी रामू टेकाम को 3 लाख 92 हजार 228 मत ही प्राप्त हुए थे। दोपहर 2 बजे तक कुल 11 राउंड की मतगणना होने के बाद मतों की जो बढ़त भाजपा के पक्ष में नजर आई उससे साफ हो गया था कि भाजपा प्रत्याशी डीडी उइके रिकार्ड जीत की तरफ बढ़ रहे हैं।

मिली जानकारी के अनुसार मतगणना 20 राउंड हुए हैं, इसमें भाजपा प्रत्याशी ने रिकार्ड 3 लाख 80 हजार 604 मतों के बड़ी अंतर से जीत दर्ज कर ली है। यानी पिछले चुनाव का 3 लाख 69 हजार का अपना ही रिकार्ड तोड़ने में श्री उईके सफल हुए है।

पांचवें राउंड में ही दिखी कांग्रेस में हताशा- काउंटिंग शुरू होने के पूर्व कांग्रेस और भाजपा दोनो ही दलों के प्रतिनिधि काउंटिंग सेंटर पर पहुंच चुके थे, लेकिन शुरुआती दौर से ही भाजपा के बढ़त बनाने और पांचवे राउंड में अच्छी खासी बढ़त बनाने के बाद मौजूद कांग्रेस जनों में हताश नजर आने लगी और एक एक कर कांग्रेसियों ने रुखसत होना शुरू कर दिया था। इधर भाजपा के सांसद पद प्रत्याशी डीडी उइके अपने निवास से ही रुझानों की जानकारी लेते रहे। लेकिन भाजपा जिलाध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला सहित तमाम भाजपा पदाधिकारी और कार्यकर्ता पूरे समय काउंटिंग सेंटर पर बने रहे। कांग्रेस प्रत्याशी रामू टेकाम कांग्रेस कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करने मतगणना स्थल पहुंचे और सभी से मुलाकात कर उनका हौंसला अफजाई करने से नहीं चुके। इस दौरान उन्होंने जिला निर्वाचन अधिकारी से भी चर्चा की।

प्रदेश की जीत में हेमंत की भी रही भूमिका

मध्यप्रदेश की सभी 29 सीटों पर भाजपा का परचम लहराया है। विधानसभा चुनाव के बाद लोकसभा में भी शत प्रतिशत सफलता मिलने से भाजपा में मध्यप्रदेश के नेताओं का कद बढ़ना तय हो गया है। बैतूल के भाजपा विधायक और 2024 के लोकसभा चुनाव में मध्यप्रदेश की सभी सीटों के लिए चुनाव संयोजक हेमंत खंडेलवाल बनाए गए थे और भाजपा को सभी 29 सीटों में विजय प्राप्त होने की स्थिति में श्री खंडेलवाल की भी बड़ी भूमिका बताई जा रही है। आज भी मतगणना के दौरान श्री खण्डेलवाल भोपाल में प्रदेश भाजपा कार्यालय में भाजपा के संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा के साथ मतगणना का अपडेट ले रहे थे।

जनता के मन में मोदी है : डीडी उईके

अपनी जीत को लेकर भाजपा के प्रत्याशी डीडी उइके ने इसका श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा संगठन को देते हुए कहा कि इस ऐतिहासिक जीत के पीछे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा संगठन का विशेष योगदान है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व और जनहित के संकल्प के साथ की गई सेवा, सुशासन और उन जन कल्याणकारी योजनाओं का ही नतीजा है कि एक संकल्प के साथ जीत हासिल हुई है। भाजपा की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम छोर के व्यक्ति तक पहुंचाने का काम भाजपा ने किया है। यही वजह हैं कि आज पूरे देश मे एक बार फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा अपनी सरकार बनाने जा रही है। श्री उईके ने कहा कि मध्य प्रदेश की जनता के मन में मोदी है जिसे मध्य प्रदेश की जनता ने स्पष्ट कर दिया।

जनता का जनादेश सहर्ष स्वीकार : रामू टेकाम

लोकसभा चुनाव में एक बार फिर अपनी हार होने के बाद कांग्रेस प्रत्याशी रामू टेकाम की भी प्रतिक्रिया सामने आई है। चर्चा में कांग्रेस प्रत्याशी रामू टेकाम ने कहा कि जनता का जनादेश सहर्ष स्वीकार होने के साथ-साथ सिर आंखों पर है। हमारे संगठन के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने चुनाव में जमकर मेहनत की है, उन्हें जीत दिलाने के लिए हर सम्भव कोशिश की है। इसके लिए आभार जताया।

आजादी के बाद सर्वाधिक मतों से हुई भाजपा की जीत : हेमंत खण्डेलवाल

डी.डी.उईके को दी बधाई, मतदाताओं कार्यकर्ताओं का माना आभार

बैतूल। लोकसभा निर्वाचन 2024 में बैतूल,हरदा, हरसूद संसदीय क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी डी.डी.उईके नें 3 लाख 80 हजार 596 वोटो से जीत दर्ज कराकर रिकार्ड कायम किया है। साथ ही मध्यप्रदेश में सभी 29 सीटों पर चुनाव जीतकर भाजपा नें नया इतिहास रचा है। म.प्र लोकसभा चुनाव संयोजक, बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल नें कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी नडडा,मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव एवं प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वी.डी. शर्मा के नेतृत्व में म.प्र में भाजपा को ऐतिहासिक सफलता मिली है। श्री खण्डेलवाल के मुताबिक सांसद डी.डी. उईके नें बैतूल संसदीय क्षेत्र में आजादी के बाद सर्वाधिक मतों से जीतनें का रिकार्ड बनाया है। उन्होंने कहा की बैतूल संसदीय क्षेत्र में भाजपा ने लगातार नवमी बार जीत हासिल की है।इस ऐतिहासिक जीत के लिए उन्होनें सांसद डी.डी.उईके को बधाई देकर संसदीय क्षेत्र के मतदाताओं और पार्टी कार्यकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया है।

ढाबे पर युवकों के बीच विवाद, जमकर चले लठ, हुई चाकूबाजी, 3 के खिलाफ मामला दर्ज

बैतूल/मुलताई। मुलताई नगर के बैतूल रोड पर स्थित महाकाल ढाबा, प्रमंडल एमपी ढाबे के बाजू में बीती रात युवकों के बीच हुए विवाद में जमकर लठ चले एवं चाकू बाजी हुई। जिसमें एक युवक के सर में गंभीर चोट आई है पुलिस ने शिकायत के आधार पर तीन लोगों के खिलाफ आपराधिक मामला दर्ज कर लिया। इस घटना के वक्त का एक सीसीटीवी फुटेज भी वायरल हो रहा है जिसमें कुछ युवक ढाबे में लठ लेकर एक युवक को ढूंढते दिखाई दे रहे हैं। जिसके बाद मंगलवार को मुलताई पुलिस ने उक्त मामले में 3 लोगो के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। प्राप्त जानकारी अनुसार शुभम पिता राजू राउत ने रिपोर्ट करते हुए बताया कि वह सोमवार रात अपने दोस्त अक्षय इंगले के साथ महाकाल ढाबा परमंडल एमपी ढाबा के बाजू में खाना खाने गये थे। वहाँ पर उसके

दोस्त रविंद्र बुआडे के साथ योगेश उर्फ लाला हजारे निवासी मुलताई, प्रियांशु पवार निवासी मुलताई, शान पवार निवासी मुलताई लडाई झगडा कर रहे थे। तभी रविंद्र बुआडे उनसे छुटकर भाग गया, तो उनका विवाद देखकर वे दोनो भी भागने लगे। तभी उन लोगो ने उसे गंदी गंदी गालिया देते हुये पीछा कर पकड लिया और सभी लात घूसो से उसे मारने लगे। प्रियांशु ने उसके पास रखी चाकू से शुभम के सिर पर मारा जिसके चलते उसके सिर से खून निकलने लगा। योगेश उर्फ लाला हजारे व शान पवार ने शुभम को लकडी से मारा तथा उनके साथियों ने भी मारपीट की। मारपीट से शुभम को सिर पर, बांये आंख के नीचे, बांयी जाँघ व पीठ पर चोटे आई तथा दोस्त रविन्द्र को नाक पर, सिर में दाहिने तरफ चोट आई। शुभम ने बताया की घटना के समय उसका दोस्त अक्षय इंगले तथा प्रवीण बनखेडे दोनो मौजूद थे।

हाथ जोड़कर झुक कर अभिवादन से मिलते हैं अनेक लाभ

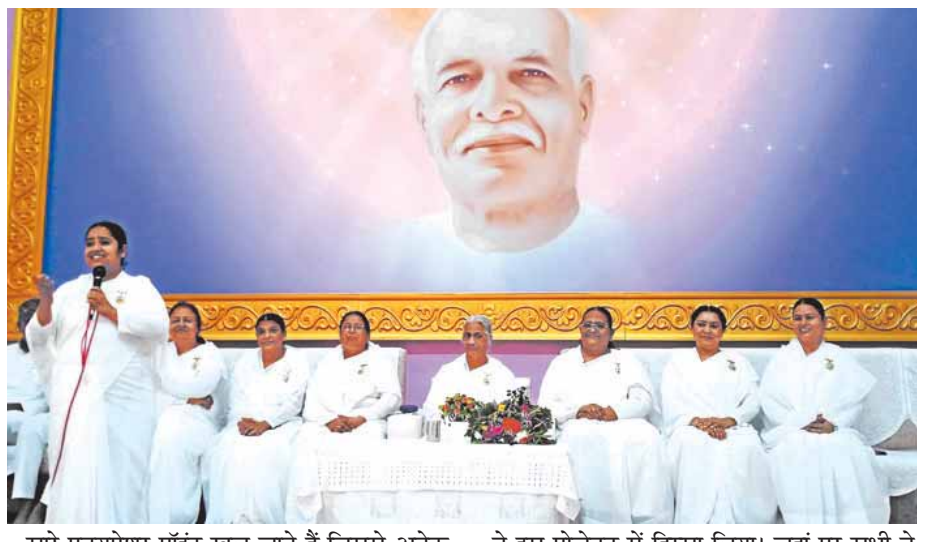

● अकाउंट्स ट्रेनिंग कार्यक्रम संपन्न

बैतूल। ब्रह्माकुमारीज का भाग्य विधाता भवन में आयोजित अकाउंट्स ट्रेनिंग कार्यक्रम संपन्न हुआ। जिसमें शिपिंग एविएशन एंड टूरिज्म विंग की जोनल कोऑर्डिनेटर ग्वालियर ब्रह्माकुमारी ज्योति बहन ने भाग्य विधाता भवन में कहा कि हमारे शिपिंग एवियशन एंड टूरिज्म प्रभाग के नमस्ते प्रोजेक्ट द्वारा जन-जन में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के प्रति जागरूकता लाई जा रही है। हम भारतीय प्राचीन समय से ही नमस्ते द्वारा अपने दोनों हाथ जोडक़र थोड़ा झुक कर अभिवादन करते हैं जिससे अनेक मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य में लाभ मिलते हैं। जैसे दोनों हाथ जोडऩे से हाथों में स्थित हमारे कई सारे एक्यूप्रेशर पॉइंट खुल जाते हैं जिससे अनेक बीमारियों से मुक्ति मिलती हैं। साथ ही जब हम सबसे बहुत प्यार से नमस्ते करते हैं तो हमारे बहुत सारे बिगड़े काम भी बन जाते हैं। यह ब्रह्माकुमारीज का राज्य स्तरीय कार्यक्रम था जिसमें प्रदेश के विभिन्न स्थानों से 100 से भी ज्यादा ब्रह्माकुमारी बहने और भाई सम्मिलित हुए तथा स्थानीय सेवा केंद्र से भी जुड़े सैकड़ों सदस्यों ने इस प्रोजेक्ट में हिस्सा लिया। जहां पर सभी ने एक दूसरे को नमस्ते करते हुए अपनी भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का परिचय दिया। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका बीके पंचशीला बहन (सीहोर), बीके मंजू (बैतूल), बीके सुनीता (सारनी), बीके दीपेन (भोपाल), बी के रानी (सतना), बीके रेखा (सीधी) बी के सुनीता (होशंगाबाद) मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

धार-महू लोकसभा सीट से भाजपा की सावित्री ठाकुर ने 2 लाख 18 हजार से अधिक मतों से जीत कर रचा इतिहास

सांसद सावित्री ठाकुर ने कहा-केंद्र व राज्य सरकार की योजनाओं की वजह से मिली सफलता, एमपी के मन में है मोदी

धार से राजेश शर्मा। धार-महू लोकसभा सीट से भाजपा की सावित्री ठाकुर ने 2 लाख 18 हजार से अधिक मतों से जीत कर इतिहास बना दिया.. सावित्री ठाकुर दूसरी बार संसद में पहुँच रही है. इसके पूर्व 2014 में उन्हें सांसद बनने का सौभाग्य मिला था.

धार-महू लोकसभा सीट पर भाजपा की सावित्री ठाकुर ने रिकॉर्ड मतों से जीत दर्ज करते हुए उन्होंने अपने प्रतिद्वंदी कांग्रेस उम्मीदवार राधेश्याम मुवेल को करीब 2 लाख 18 हजार, 655 मतों से हराया। चुनाव जीतने के बाद सावित्री ठाकुर ने मतगणना स्थल पर अपने समर्थकों के साथ विक्ट्री साइन दिखाया। साथ ही कहा कि केंद्र व राज्य सरकार की योजनाओं वजह से सफलता मिली है। एमपी के मन में है मोदी। लाभार्थियों और हितग्राहियों का विशेष अभिनंदन किया। जिन्होंने मोदी जी की गारंटी पर पूरा भरोसा दिखाया है।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने मिठाई बांटकर की आतिशबाजी,विजय जुलूस निकाला...

धार नगर में जीत पर भव्य जुलूस निकाला गया। कार्यकर्ताओं में खासा उत्साह देखने को मिला। नगर के प्रमुख मार्गो से विजयी रैली निकली। इसके माध्यम से भाजपा ने सभी मतदाताओं का आभार माना। इस जुलूस में भाजपा के नेता शामिल हुए। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि इस दौरान पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा धार विधायक नीना वर्मा, धरमपूरी विधायक कालू सिंह ठाकुर भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी किसान मोर्चा प्रदेश महामंत्री दिलीप पटोदिया, जिला उपाध्यक्ष विश्वास पांडे प्रकाश धाकड़ निलेश भारती सहित अनेक भाजपा कार्यकर्ता विजय रैली में शामिल हुए।

मतगणना की शुरुआत से ही भाजपा उम्मीदवार सावित्री ठाकुर को हर राउंड में बढत मिलती गई। जैसे-जैसे मतगणना के राउंड आगे बढ़ रहे थे उनकी रिकॉर्ड मतों से जीत को सुनिश्चित कर रहे थे। भाजपा उम्मीदवार सावित्री ठाकुर को कुल 7,94,449 वोट प्राप्त हुए। जबकि कांग्रेस उम्मीदवार राधेश्याम मुवेल 5,75,784 वोटो पर सिमट कर रह गए। भाजपा उम्मीदवार सावित्री ठाकुर ने रिकॉर्ड 2 लाख 18 हजार 665 वोटो से जीत दर्ज की। भाजपा की रिकॉर्ड जीत पर कार्यकर्ताओं ने आतिशबाजी करते हए मिठाई वितरित की।

मीडिया से चर्चा में सावित्री ठाकुर ने बताया कि मध्यप्रदेश 29 में से 29 लोकसभा जीतने के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं। 29 की 29 लोकसभा जीता कर मध्य प्रदेश वासियों ने बता दिया कि एमपी के मन में है मोदी । लाभार्थियों और हितग्राहियों का विशेष अभिनंदन, जिन्होंने मोदी जी की गारंटी पर पूरा भरोसा दिखाया है। यह परिणाम बताता है कि विगत 10 वर्षों में विकास हुआ है। मोदी की गारंटी है विकसित भारत बनाने की। मध्य प्रदेश वासियों ने इसमें बढ़कर सहयोग करा है। भाजपा संगठन के सभी कार्यकर्ताओं को बहुत बहुत शुभकामनाएं और बधाई। मोदी जी ने जो कहा सो किया। फिर एक बार मोदी सरकार।

राज्य स्तरीय ट्रायथलॉन एवं एक्वाथलॉन प्रतियोगिता हेतु जिले की टीम आज इंदौर रवाना..

नर्मदापुरम। मध्यप्रदेश ट्राईथलान संघ के तत्वावधान में दिनांक 5-6 जून 2024 को 28 वी राज्य स्तरीय जूनियर-सीनियर ट्रायथलान तथा जूनियर,सब जूनियर एवं मिनी वर्ग की एक्वाथलान प्रतियोगिता में शामिल होने वाले सीनियर ट्रायथलॉन यश बाथरे, अनुज उमरे जूनियर ट्रायथलान-सरगम बाथरे जूनियर

एक्वाथलान-हर्ष सोनी, तन्मय,सर्वस्व मोटवानी, अभिनव,प्रियव्रत व्यास और इशीता मालवीय सब जूनियर एक्वाथलान (बालक)-अनंत शर्मा, दृश्य यादव,स्वयं राजदेव,नितांय यादव,अमय मिश्रा जूनियर एक्वाथलान- (बालिका) कनिष्क बाथरे,नमामी चौकसे,रेवा बाथरे मिनी वर्ग एक्वाथलान बालक बालिका क्रमशः माधव चौकसे,आरोही रैकवार,दल के प्रशिक्षक कमलेश बाथरे एवं मैं मैनेजर श्याम राजदेव रहेंगे। टीम रवाना होने के पूर्व संघ के अध्यक्ष तथा ऑलंपिक संघ के उपाध्यक्ष विधायक श्री विजय पाल सिंह से मिले उन्होंने उत्कृष्ट प्रदर्शन की अपेक्षा शुभकामनाएं प्रेषित की इस दौरान श्री मुकुल गुप्ता कमलेश बाथरे, धीरेन्द्र मिश्रा,राजा चौकसे,बबलू यादव एवं श्याम राजदेव आदि उपस्थित थे उन्होंने भी अपनी शुभकामनाएं दी ।

8 वर्षीय मासूम के ऊपर गिरी दीवार:गंभीर रूप से घायल होने पर अस्पताल में भर्ती कराया गया

हरदा (निप्र)। हरदा जिले में शहर के टंकी मोहल्ले में एक आठ वर्षीय बालक के ऊपर घर की दीवार गिरने सिर में गंभीर चोटें आई है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, टंकी मोहल्ला में रहने वाले श्रवण कुचबंदिया अपने पुराने घर की दीवार को तोड़ रहे थे। पिता के साथ बेटा सिद्धार्थ कुचबंदिया (8) भी उनकी मदद कर रहा था।

इसी दौरान मकान की दूसरी दीवार उसके ऊपर गिर गई। जिसके वजह से वह दब गया। जिससे उसके सिर में गंभीर चोटें आई है। घटना के बाद परिजनों ने उसे उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया है। जहां शिशु वार्ड में उसका उपचार जारी है।

हेल्थ कैंप लगाया, बीपी-शुगर की जांच की

नर्मदापुरम(निप्र)। नर्मदा हेल्थ ग्रुप ने बैंक ऑफ इंडिया में स्वास्थ्य शिविर लगाया। इसमें बैंक उपभोक्ताओं और स्टाफ के स्वास्थ्य की जांच की गई। डॉ. सत्येंद्र परमार, सुमित गौर, अनिल गौर ने अपनी टीम के साथ बीपी, शुगर सहित अन्य बीमारियों की जांच की और परामर्श दिया गया। इस दौरान बीओआई के ब्रांच मैनेजर प्रसून मिश्रा, कृषि शाखा मैनेजर शशिकांत ठाकुर, अकित दुबे, रामगोपाल बामने, मनीष यादव सहित बैंक स्टाफ मौजूद रहा।

किशोरी को खोजने एसपी से गुहार

विदिशा(निप्र)। गुलाबगंज तहसील के गांव में रहने वाले एक परिवार के सदस्य ने एसपी कार्यालय पहुंचकर अपनी 15 वर्षीय बेटी के लापता होने की शिकायत की। उन्होंने गंजबासौदा निवासी एक युवक का उल्लेख करते हुए बताया कि उनकी बेटी के गायब होने के पीछे युवक का हाथ है। गुलाबगंज पुलिस को इस बारे में पूरी जानकारी दी गई है, लेकिन पुलिस 29 मई से लेकर अब तक कोई कार्रवाई नहीं कर रही।

खैरा में जनकल्याण शिविर संपन्न, योजनाओं की दी जानकारी

पिपरिया (निप्र)। शासन की समस्त योजनाओं के संबंध में जनकल्याण शिविर का आयोजन खैरा में किया गया। जिला नर्मदापुरम के ग्रामों में ग्रामीणों को शासन की समस्त योजनाओं का लाभ प्राप्त हो रहा है। अन्य किसी प्रकार की कोई समस्या न हो इस के लिए अनुविभाग व जिला अधिकारियों का ग्राम भ्रमण आदेश के अंतर्गत जनकल्याण शिविर का आयोजन हुआ जिसमें खैरा, गडरोली व ढांडिया से सैकडों ग्रामीणों ने शामिल होकर विभिन्न योजनाओं का लाभ लिया व स्वास्थ्य परीक्षण कराकर निःशुल्क दवाइयां प्राप्त की। खैरा में आयोजित शिविर में सर्वप्रथम एसडीएम संतोष तिवारी ने शासन की योजनाओं के बारे में विस्तार से बताते हुए शिविर में आई अधिकांश समस्याओं का तत्काल निराकरण किया, तहसीलदार वैभव बैरागी व नायब तहसीलदार तीरथलाल इरपाची ने शिविर के दौरान राजस्व सहित विभिन्न विभागों की आई समस्याओं का निराकरण हेतु पहल की जिन समस्याओं का निराकरण नहीं हो पाया उन्हें लिखित में लेकर शीघ्र निराकरण का आश्वासन दिया।

लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र 17-होशंगाबाद नरसिंहपुर

संसदीय सीट पर दर्शन सिंह ने परचम फहराया.. नोटा में 14936 मत पड़े..

नर्मदापुरम। लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र 17-होशंगाबाद नरसिंहपुर संसदीय क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी दर्शन सिंह चौधरी ने अपने प्रतिद्वंद्वियों को परास्त करते हुए कांग्रेस उम्मीदवार संजय शर्मा को 431696 मतों से परास्त करते हुए अपनी जीत दर्ज कराई है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी ने भारतीय जनता पार्टी के विजयी प्रत्याशी दर्शन सिंह चौधरी को प्रमाण पत्र प्रदान किया। 18 वें संसदीय चुनाव में भाजपा प्रत्याशी दर्शन सिंह चौधरी की जीत पर संसदीय क्षेत्र को उनसे काफी उम्मीदें हैं, इस बार होशंगाबाद क्षेत्र के खाते में जनप्रतिनिधियों की उपलब्धियों की भरमार है। राज्यसभा सांसद, सांसद, चार विधायक एक मंत्री होने के बावजूद क्षेत्र विकास कार्यों में उपेक्षित ही नहीं काफी पिछड़ा हुआ है.. सरकार और प्रतिनिधियों का तालमेल क्षेत्र की जनता की भलाई की दिशा में बगैर पक्षपात होना चाहिए। 18 वी लोकसभा के नव निर्वाचित सांसद दर्शन सिंह चौधरी का इस मौके पर पार्टी कार्यालय से भव्य विजय जुलूस निकाला गया। श्री चौधरी का नगर में जगह जगह स्वागत हुआ, खुली गाड़ी में श्री चौधरी लोगों का अभिवादन स्वीकार कर रहे थे। उनके साथ इस मौके पर राज्यसभा सांसद श्रीमती माया नारोलिया और पार्टी कार्यकर्ता उपस्थित थे।

पलकमती नदी के पुर्नजीवन,जल संरक्षण को लेकर 6 जून को नगर पंचायत परिषद में जल सम्मेलन

हीरालाल गोलानी सोहागपुर

नगर के बीचोंबीच अपना अस्तित्व खोने वाली पलकमती नदी के पुर्नजीवन एवं जल संरक्षण हेतु जल सम्मेलन विशेष बैठक का आयोजन 06 जून को नगर पंचायत परिषद सोहागपुर के सभा कक्ष में आयोजित किया गया है नगर पालिका अधिकारी जीएस राजपूत ने सुबह सवेरे संवाददाता को बताया कि प्रदेश के समस्त नगरीय निकायों में जल स्त्रोतो तथा नदी, तालाबों, कुओं, बावड़ी तथा अन्य जल स्त्रोतों के संरक्षण एवं पुर्नजीवन हेतु 5 जून से 16 जून तक विशेष जल अभियान के संचालन किया जाना है। इसी संदर्भ को लेकर उक्त आयोजन किया जा रहा है। आयोजन दोपहर 11.30 से प्रारंभ होगा।इस आयोजन में क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह, वरिष्ठ अधिकारी,नगर पंचायत अध्यक्ष श्रीमती लता यशवंत पटैल सहित पार्षद गणों के अलावा गणमान्य नागरिकों को आमंत्रित किया गया है। जिसमें सहभागिता के सामाजिक संस्थाओं की उपस्थिति रहेगी।

ध्यानाकर्षण

पलकमती नदी में नगर के करीबन 10से अधिक गंदे नालों का पानी लगभग बीसियों सालों से मिलता रहा है।इसी कारण पलकमती नदी की सेहत अत्यधिक खराब हो गई। जिसके कारण नदी में घास एवं छाड़िया उग आई है।

सफाई अभियानों की आड़ में पलकमती नदी दोहन

पलकमती नदी की सफाई अभियान के नाम पर पलकमती नदी का हर बार दोहन किया गया है। नगर की एक बड़ी बिल्डिंग में कई ट्रालियों से बजरा ले जाया गया।यह नगरवासियों से छुपा हुआ नहीं।

फिर हुआ पलकमती नदी को साबरमती बनाने

साबरमती की आड़ में सैकड़ों ट्रालियों से पलकमती नदी को मिट्टी नगर की एक बड़ी चर्चित कालोनी पहुंचाई गई। इस प्रतिनिधि के पास दोहन करके ले जाई जा रही पलकमती नदी की मिट्टी के फाईल चित्र उपलब्ध हैं। जब पलकमती नदी की मिट्टी यहां से ले जाई जाती थी।तब नागरिक चुटकियां लेने से बाज नहीं आते थें। प्रत्यक्षदर्शी कहते थे।लो चर्चित कालोनी साबरमती बन रही है।

सावधानी की जरूरत

हालांकि इस बार कलेक्टर सोनिया मीना ने पलकमती नदी के जीवणोउद्वार में सकारात्मक कदम उठाए हैं। इससे जनमानस में विश्वास का संचार हुआ। फिर भी सावधानी की जरूरत है।

विदाई समारोह में सेवानिवृत्त हुए श्री यादव के कार्यों को याद किया गया

विदिशा(निप्र)। लोक निर्माण विभाग के कार्यपालन यंत्री श्री एल एस यादव शासकीय सेवा से सेवानिवृत्त हो गए हैं। पीआईयू के महाप्रबंधक श्री बुंदेल सिंह राजपूत को पीडब्ल्यूडी ईई का प्रभार सौंपा गया है। श्री यादव के सेवानिवृत्ति पर एक निजी होटल में आयोजित विदाई समारोह को संबोधित करते हुए कलेक्टर श्री बुद्धेश कुमार वैद्य ने कहा कि श्री यादव के द्वारा किए गए कार्यों से उनको याद किया जाएगा। उनके मधुर व्यवहार और कार्यों के प्रति समर्पण की भावना अन्य के लिए प्रेरणा देती है। विदाई समारोह को अपर कलेक्टर श्री अनिल कुमार

डामोर सहित विभागीय अधिकारियों के अलावा मौजूद अन्य अतिथियों ने संबोधित किया। इस दौरान सेवानिवृत हुए श्री एल एस यादव ने अपनी शासकीय सेवा काल के संस्मरणों को सांझा किया। जिसमें मुख्य रूप से उन्होंने विदिशा जिले में आई बाढ़ के दौरान हेलीकॉप्टरों के लिए उतरने और दिग सूचक के कार्यों को रेखांकित किया है। कार्यक्रम के अंत में श्री यादव को जिला प्रशासन सहित अन्य के द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट कर उन्हें भाव-विभोर विदाई देते हुए उनके स्वास्थ्यवर्धक बने रहने की शुभकामनाएं अभिव्यक्त की हैं।

जलकुंभी हटाने का अभियान जारी : माझी समाज के लोगों ने किया श्रमदान

विदिशा(निप्र)। विदिशा के बेतवा नदी को बचाने के लिए जलकुंभी हटाओ-बेतवा नदी बचाओ अभियान चलाया जा रहा है , इस अभियान के तहत बेतवा नदी से जलकुंभी हटाने के लिए श्रमदान किया जा रहा है। जिससे बेतवा नदी को साफ सुधरा किया जाए। आज यानी रविवार को माझी समाज के लोग बेतवा नदी पहुंचे और नदी को साफ करने के लिए श्रमदान किया ।

विदिशा की जीवन दायनी बेतवा नदी इन दिनो प्रदूषण की चपेट में है। शहर का गंदा पानी लगातार नदी में मिलने से पानी दूषित हो रहा है। जिसके चलते बेतवा नदी में जलकुंभी छा रहीं है। बेतवा नदी हरा खेल का मैदान नजर आ रहा है। ऐसे में लोग बेतवा नदी में नहाने में कतरा रहे है ।बेतवा नदी के प्रदूषण से बचाने के लिए नहीं जिला प्रशासन और ना ही नगर पालिका की ओर से कोई ठोस कार्रवाई की गई जिसकी वजह से शहर के लोगों को दम तोड़ती बेतवा नदी को बचाने के लिए आगे आना पड़ा।

जलकुंभी हटाओ बेतवा नदी बचाओ अभियान में अपने श्रम की आहुति देने के लिए आज मन की समाज के लोग पहुंचे और जलकुंभी हटाने के लिए अपना योगदान दिया। बेतवा उत्थान समिति के पदाधिकारी अतुल शाह ने जहां माझी समाज का धन्यवाद दिया तो वहीं शहर के अन्य सामाजिक संगठन और अन्य समाज के पदाधिकारियों से बेतवा नदी में श्रमदान करने की अपील की।

भूसे हटाने के दौरान जहरीले सांप ने डसा : अस्पताल लाने के दौरान 55 वर्षीय व्यक्ति की मौत

हरदा (निप्र)। जिले के हंडिया थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम बिछोला में एक व्यक्ति की जहरीले सांप के काटने से मौत हो गई है। सोमवार सुबह जिला अस्पताल में मृतक के शव का पीएम कराकर परिजनों को सौंप दिया गया है। पुलिस ने मर्ग कायम कर लिया है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार ग्राम बिछोला के रहने वाले अर्जुन सिंह पिता हजारी कलम उम्र 55 साल शनिवार शाम को अपने घर के कमरे में रखे पुराने भूसे को हटाकर नए भूसे को भरने की तैयारी कर रहे थे। इस दौरान जैसे ही उन्होंने भूसे में हाथ डाला भूसे के अंदर बैठे जहरीले सांप ने उनके बाए है हाथ की उंगली में डंक मार दिया। इस दौरान उनके परिजन मजदूरी करने गए हुए थे। बुजुर्ग ने आस पड़ोस के लोगो को बताया जिसके बाद उन्होंने परिजनों को सूचना दी, जिसके बाद उन्हें तत्काल निजी साधन ने जिला अस्पताल लाया जा रहा था। इस दौरान रास्ते मे ही उनकी मौत हो गई। बताया जा रहा है मृतक अर्जुन सिंह कमल मजदूरी करते थे। उनके दो लड़के और तीन लकड़ियां है।

दमोह में 4 लाख से ज्यादा वोटों से जीती भाजपा

सीट पर अब तक सबसे ज्यादा वोट पाने वाले प्रत्याशी बने राहुल सिंह लोधी

दमोह (नप्र)। दमोह लोकसभा सीट के लिए मतगणना लगभग पूरी हो चुकी है। इसमें बीजेपी राहुल सिंह लोधी ने 4 लाख से ज्यादा वोटों से जीत दर्ज की है। अब बस इसकी औपचारिक घोषणा होना बाकी है। उन्होंने कांग्रेस प्रत्याशी तरवर सिंह को पराजित किया है। वहीं बीजेपी-कांग्रेस के अलावा यहां से 12 प्रत्याशी और मैदान में थे।

बता दें, दमोह में पॉलिटेक्निक कॉलेज में मतगणना की गई। इसके अलावा बड़ामलेहरा विधानसभा की मतगणना छतरपुर में और रहली, बंडा और खुरई की मतगणना सागर हुई। दमोह लोकसभा में आठ विधानसभा क्षेत्र आते हैं। जिनमें दमोह, पथरिया, हटा और जबेरा वहीं सागर जिले की रहली, देवरी और बंडा विधानसभा आती हैं इसके अलावा छतरपुर जिले की बड़ा मलहरा भी दमोह लोकसभा में आती है।

सतना सीट लगातार 5वीं बार जीते गणेश सिंह

कांग्रेस के सिद्धार्थ कुशवाहा को 84 हजार 449 वोटों से हराया

सतना (नप्र)। सतना लोकसभा सीट पर ईवीएम के मतों की गिनती पूरी कर ली गई है। मतगणना के बाद सतना सीट से भाजपा प्रत्याशी गणेश सिंह 84 हजार से ज्यादा वोटों से विजयी हुए हैं। सतना सीट पर इस बार 19 प्रत्याशी मैदान में थे। जबकि विधानसभा चुनाव हार चुके मैहर के पूर्व विधायक नारायण त्रिपाठी भी बसपा के सहारे अपने राजनैतिक भविष्य को बचाने की कोशिश में लगे थे। जिन्हें भी हार का सामना करना पड़ा।

मंदसौर में बीजेपी के सुधीर ने जीत की हैट्रिक लगाई

खुद का रिकॉर्ड तोड़ा, कांग्रेस प्रत्याशी दिलीप गुर्जर को 4 लाख 25 हजार वोट मिले

मंदसौर (नप्र)। मंदसौर लोकसभा सीट पर भाजपा प्रत्याशी सुधीर गुप्ता ने जीत की हैट्रिक लगाई। जनता को धन्यवाद देते हुए उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं के प्रयासों से जीत मिली है।

बता दें कि बीजेपी के सुधीर गुप्ता का मुकाबला कांग्रेस के दिलीप सिंह गुर्जर से था। इस सीट पर कुल आठ प्रत्याशी मैदान में थे। वहीं, कुल 18 लाख 98 हजार 60 वोटर में से 14 लाख 28 हजार 383 ने मतदान हुआ था। इसमें से भाजपा को 9 लाख 3 हजार 147 वोट मिले। जबकि कांग्रेस प्रत्याशी को महज 4 लाख 25 हजार 592 वोट ही मिल पाए।

मतगणना के दौरान कांग्रेस प्रत्याशी दिलीप सिंह गुर्जन ने ईवीएम में गड़बड़ी की आशंका जताई और निर्वाचन अधिकारी से शिकायत दर्ज करवाई। उन्होंने कहा कि वर्तमान भाजपा का सांसद जो कभी गांवों में नहीं गया, उनका अपने कार्यकर्ताओं में ही जबरदस्त विरोध था, उसके बाद भी इतना बड़ी लीड मिलना इस बात की ओर इशारा है कि ईवीएम में गड़बड़ी है। ईवीएम की बैटरी 98 प्रतिशत पाई गई है। जबकि कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने इसकी रीडिंग की थी तब 54 से 75 प्रतिशत तक थी। हमारे कार्यकर्ताओं ने आपत्ति भी जताई लेकिन उनकी कोई सुनवाई नहीं हुई। इस पर भाजपा प्रत्याशी सुधीर गुप्ता ने कहा कि वे (कांग्रेसी) जहां-जहां जीते वहां की ईवीएम का भी रिकॉर्ड भी लाकर सामने रखे तो ज्यादा अच्छा रहेगा। आरोप लगाना बहुत आसान है। तीसरी बार हम मोदी के नेतृत्व में सरकार बनाने जा रहे हैं।

म.प्र.के तीर्थ यात्री की गंगोत्री में मौत, गाड़ी पर चट्टान गिरने से हादसा

भोपाल (नप्र)। उत्तराखंड में मध्यप्रदेश के एक तीर्थ यात्री की मौत हो गई। हादसा सोमवार शाम करीब 6 बजे गंगोत्री धाम के पास हुआ। यहां तीर्थ यात्रियों से भरी एक गाड़ी पर एक बोल्डर (पत्थर की चट्टान) गिर पड़ी। वाहन में मध्यप्रदेश के 8 तीर्थ यात्री सवार थे। इनमें से 30 साल के उमेंद्र रैकवार की मौत हो गई। उमेंद्र नयाबाजरा जिला दमोह का रहने वाला था। एमरजेंसी एम्बुलेंस 108 के कंट्रोल रूम से मिली जानकारी के मुताबिक तीर्थ यात्रियों की बस यमुनोत्री से गंगोत्री की ओर जा रही थी। बस जब सुनगर के नजदीक पहुंची तभी बस के गेट पर पहाड़ से खिसकी एक बड़े पत्थर की चट्टान जाकर टकरा गई।

जीत का जश्न

भोपाल के वीआईपी रोड चौराहे पर 370 फीट ऊंचा एयर बैलून उड़ा कर किया धन्यवाद भोपाल लोकसभा से आलोक शर्मा की जीत से समर्थकों में जश्न मनाया।

बीजेपी ऑफिस में जश्न का था माहौल

शाम को भोपाल में भाजपा ऑफिस में ढोल-बाजों के साथ जश्न शुरू हो गया था और जश्न का माहौल था।

राजधानी में इन प्रत्याशियों ने लड़ा था चुनाव

1- आलोक शर्मा, भाजपा- 858558
2- अरुण श्रीवास्तव, कांग्रेस- 448676
3- भानु प्रताप सिंह, बसपा- 11499
4- दीनदयाल अहिरवार- 3320
5- जय सिंह- 2189
6- भारती यादव -1651
7- अंकित राय- 984
8- मोहम्मद अशरफ- 696
9- अजय कुमार पाठक- 683
10- धनराज शेंडे- 685
11- बाबूलाल सेन- 627
12- संजय कुमार सरोज- 538
13- रामप्रसाद पटेल- 495
14- मुदित चौरसिया- 491
15- बलराम सिंह तोमर- 476
16- आरके महाजन- 481
17- मुदित भटनागर- 463
18- अब्दुल ताहिर- 419
19- राजेश कीर- 389
20- मैथिली शरण गुप्त- 386
21- अक्षय गोठी- 346
22- हितेंद्र शहारे- 275

भोपाल में आलोक शर्मा 5 लाख वोटों से जीते

बीजेपी को 9,81,109 मत, कांग्रेस प्रत्याशी को 4,79,610 वोट मिले

भोपाल (नप्र)। भोपाल में भाजपा प्रत्याशी आलोक शर्मा ने 5 लाख 1499 वोटों से जीत दर्ज की है। उन्हें 9 लाख 81 हजार 109 वोट मिले हैं। जबकि कांग्रेस कैंडिडेट अरुण श्रीवास्तव को 4 लाख 79 हजार 610 वोट प्राप्त हुए। नोटा को 6629 वोट मिले। सभी प्रत्याशियों को मिलाकर 14 लाख 91 हजार 664 वोट गिने गए। भोपाल लोकसभा सीट से कुल 22 कैंडिडेट्स मैदान में थे। भोपाल स्थित पुरानी जेल में सुबह 8 बजे से मतगणना शुरू हुई। सबसे पहले पोस्टल बैलेट गिने गए। इसके बाद ईवीएम की काउंटिंग शुरू की गई थी।

जीत के बाद भाजपा कार्यालय पहुंचे आलोक शर्मा

20 राउंड की गिनती पूरी होने व जीत के बाद प्रत्याशी आलोक शर्मा भाजपा कार्यालय पहुंचे। इस दौरान उन्होंने विक्ट्री साइन दिखाया।

भोपाल उत्तर में सबसे कम 16 राउंड हुए। जबकि गोविंदपुरा में 20 राउंड की गिनती की गई। इसी तरह नरेला, भोपाल दक्षिण-पश्चिम के 17-17, बैरसिया और मध्य के 18-18, हुजूर के 19 राउंड की गिनती हुई।

भाजपा ने ग्वालियर चंबल सहित बुंदेलखंड में किया क्लीन स्वीप

ग्वालियर से भारत सिंह, मुरैना से शिवमंगल सिंह, टीकमगढ़ से वीरेंद्र कुमार व खजुराहो से वीडी शर्मा जीते

भोपाल (नप्र)। भाजपा ने ग्वालियर चंबल सहित बुंदेल खंड में क्लीन स्वीप किया है। ग्वालियर लोकसभा क्षेत्र से भाजपा के भारत सिंह कुशवाह ने कांग्रेस के प्रवीण पाठक को, मुरैना लोकसभा क्षेत्र से शिवमंगल सिंह तोमर ने कांग्रेस के सत्यपाल सिंह सिकरवार को, टीकमगढ़ में डॉ. वीरेंद्र कुमार ने कांग्रेस के पंकज को हाराया। साथ ही खजुराहो में भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा ने जीत दर्ज

की है। इसके साथ ही गुना शिवपुरी सीट से ज्योतिरादित्य सिंधिया ने जीत दर्ज की है। इसमें खास बात यह रही है कि टीकमगढ़ में डॉ. वीरेंद्र कुमार व गुना से ज्योतिरादित्य सिंधिया ने 4 लाख से ऊपर की जीत दर्ज की है।

ग्वालियर लोकसभा क्षेत्र से भाजपा के भारत सिंह ने कांग्रेस के प्रवीण पाठक को करीब 50 हजार मतों से हरा दिया। जीत के बाद वे विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर से आशीर्वाद लेने के लिए उनके बंगले पर पहुंचे।

शिवमंगल बोले मोदी को तीसरी बार पीएम बनाने जनता ने दिए वोट

जीत के बाद भाजपा प्रत्याशी शिवमंगल सिंह तोमर ने कहा कि जनता का मन था, कि नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बनें, इसलिए जनता ने वोट दिए। भाजपा के कार्यकर्ता और पुराने नेताओं ने भी खूब मेहनत की। रोजगार से लेकर हर क्षेत्र में काम करना हमारी प्राथमिकता है।

मुरैना से भाजपा के शिवमंगल सिंह तोमर जीते

मुरैना-श्योपुर लोकसभा क्षेत्र से शिवमंगल सिंह तोमर जीत गए हैं। उन्होंने कांग्रेस के सत्यपाल सिंह सिकरवार उर्फ नीटू को हराया है। शिवमंगल सिंह ने सत्यपाल सिंह को करीब 46 हजार मतों से हराया।

जीतने के बाद डॉ. वीरेंद्र कुमार पहुंचे मतगणना केंद्र, दिखाया विक्ट्री साइन

टीकमगढ़ लोकसभा क्षेत्र से भाजपा के डॉ. वीरेंद्र कुमार चार लाख से अधिक मतों से जीते है। चुनाव जीतने के बाद वीरेंद्र कुमार मतगणना केंद्र पहुंचे और अपने समर्थकों के साथ विक्ट्री साइन दिखाया। साथ ही कहा कि केंद्र व राज्य सरकार की योजनाओं वजह से सफलता मिली है।

ग्वालियर चंबल व बुंदेलखंड में भाजपा क्लीन स्वीप करती नजर आ रही है। टीकमगढ़ और गुना सीट को भाजपा जीत चुकी है। साथ ही ग्वालियर में भाजपा 50 से, मुरैना में भाजपा 32 हजार से व भिंड में भाजपा 26 हजार से आगे चल रही है।

सिंहस्थ के पहले महाकाल लोक में लगेंगी नई मूर्तियां

पुरानी को चौराहों पर शिफ्ट करेंगे; पीसीसी चीफ बोले- भाजपा दूसरी बार करप्शन कर रही

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन स्थित महाकाल लोक में 2028 में होने वाले सिंहस्थ से पहले सभी 106 नई मूर्तियां लगेंगी। हाट बाजार में मूर्तियां बनाने का काम भी शुरू हो गया है। सबसे पहले सप्तऋषि की सात मूर्तियों को बनाया जाएगा। वर्तमान में यहां लगी मूर्तियों को चौराहों पर शिफ्ट किया जाएगा। इस पर पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने भाजपा सरकार के लिए कहा, 'बीजेपी दूसरी बार करप्शन कर रही है।'

11 अक्टूबर 2022 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महाकाल लोक का लोकार्पण किया था। इसके बाद से यहां भक्तों की संख्या में बढ़ोतरी हो गई। इस बीच, 28 मई 2023 की शाम आंधी के चलते महाकाल लोक में स्थापित सप्तऋषि की 6 मूर्तियां गिर गईं। इसके बाद मूर्तियों की मजबूती को लेकर सवाल खड़े किए गए। कांग्रेस ने महाकाल लोक निर्माण में भ्रष्टाचार का आरोप लगाया। प्रदर्शन करते हुए जांच की मांग की थी। उज्जैन में 28 मई 2023 को आंधी के कारण महाकाल लोक की मूर्तियां गिर गई थीं। इन्हें उठाने के लिए क्रेन की मदद ली गई थी।

दो भागों में काम कर रही टीम- विक्रमादित्य शोध पीठ, हरिफाटक स्थित उज्जैन हाट बजार में महाकाल लोक के लिए सप्त ऋषि की 7 मूर्तियों का निर्माण करवा रहा है। यहां ओडिशा के 10 कलाकार दिन-रात मेहनत कर मूर्तियों को आकार दे रहे हैं। सप्त ऋषि की मूर्तियां राजस्थान के बंसी पहाड़पुर पत्थर से बनाई जा रही हैं। हालांकि राजस्थान से पत्थर आने में देरी के कारण सप्त ऋषियों की मूर्ति बनने में भी देरी हो रही है। ओडिशा के कलाकार बताते हैं कि दो अलग-अलग हिस्से में टीम काम कर रही है। पहली टीम सप्तऋषि की मूर्तियों को उकेर रही है, तो वही दूसरी टीम मूर्ति को रखने के लिए आधार बनाने का कार्य कर रही है।

महाकाल लोक की मूर्तियों को शिफ्ट करेंगे

विक्रमादित्य शोध पीठ के निदेशक श्रीराम तिवारी ने बताया कि 5 जनवरी 2024 को विक्रमोत्सव को लेकर हुई बैठक में सीएम मोहन यादव ने निर्देश दिए थे कि मूर्तिकला की कार्यशाला होना चाहिए। जिससे मालवा के लोग मूर्ति कला को रोजगार के रूप में अपना सकते हैं। सीएम ने कहा कि महाकाल लोक की फायबर की मूर्तियां भविष्य में खराब हो जाएंगी। इन मूर्तियों को चौराहों या अन्य जगह स्थापित करेंगे। शुरुआत में इन मूर्तियों को विक्रमशोध पीठ परिसर और कीर्ति मंदिर में स्थापित किया जाएगा।

5 फीट की मूर्ति की लागत 20 से 25 लाख रुपए

श्रीराम तिवारी ने बताया कि आगामी सिंहस्थ कुम्भ से पहले सभी मूर्तियों को बदला जाएगा। फिलहाल, ओडिशा के कलाकार इन्हें बना रहे हैं। भविष्य में अन्य शहरों के कलाकार भी मूर्तियों को बनाने के लिए उज्जैन के हाट बाजार पहुंचेंगे। 15 फीट ऊंची एक मूर्ति की लागत करीब 20 से 25 लाख रुपए के बीच आएगी। सभी मूर्तियों को भारतीय मूर्ति कला का विधान की तरह बनाया जाएगा। जितनी जरुरत होगी, उतनी मूर्तियां बनाई जाएंगी। सीएम के निर्देश पर काम हो रहा है। हालांकि अब तक लिखा-पढ़ी नहीं हुई।

मप्र में आदिवासियों ने फिर जताया भाजपा पर भरोसा

सभी 6 सुरक्षित अनुसूचित जनजाति सीटों पर भाजपा को फिर मिली जीत

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में आदिवासियों ने भाजपा पर ही भरोसा जताया है। लोकसभा की छह सीटें अनुसूचित जनजाति वर्ग के लिए आरक्षित हैं। चार सीटें अनुसूचित जाति वर्ग के लिए आरक्षित हैं। आदिवासियों के लिए सुरक्षित सीटों के अतिरिक्त बालाघाट और छिंदवाड़ा सीटें ऐसी हैं, जहां आदिवासी वर्ग निर्णायक भूमिका में हैं।

2018 के विधानसभा चुनाव में आदिवासी मतदाताओं का झुकाव कांग्रेस की ओर था पर लोकसभा चुनाव में भाजपा के साथ खड़े हुए। 2023 के विधानसभा चुनाव में कुछ अंचलों में आदिवासियों ने कांग्रेस का साथ दिया तो कुछ जगह यह भाजपा के साथ रहे। लोकसभा चुनाव में इन्हें साधने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने आदिवासी बहुल सीटों पर प्रचार किया।

पीएम मोदी के नेतृत्व पर जताया भरोसा- अब चुनाव परिणाम ने स्पष्ट कर दिया

कि आदिवासी समाज ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व पर भरोसा जताया है। मालवांचल की तीन आदिवासी सीटों पर लोकसभा चुनाव में भाजपा और कांग्रेस के बीच कड़ा संघर्ष होने की संभावना दिख रही थी।

विधानसभा चुनाव 2023 के परिणामों पर नजर डालें तो खरगोन, रतलाम और धार जैसी सुरक्षित सीटों पर कांग्रेस ने अधिक सीटें जीती थीं, इसलिए भाजपा के लिए चुनौतियां भी अधिक थी। यही वजह है कि इन क्षेत्रों में कांग्रेस उत्साहित थी लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने झाबुआ जिले से ही लोकसभा चुनाव के प्रचार का शंखनाद कर ऐसा माहौल बनाया कि सारे परिणाम भाजपा के पक्ष में आ गए।

आदिवासियों ने फिर जताया भाजपा पर भरोसा

रतलाम-झाबुआ सीट से कांग्रेस प्रत्याशी पूर्व केंद्रीय मंत्री कांतिलाल भूरिया कांग्रेस को भाजपा की अनीता चौहान ने पराजित कर दिया। खरगोन में भी दोनों दलों के बीच रोचक संघर्ष का माहौल बना। भाजपा ने यहां फिर सांसद गजेंद्र सिंह पटेल को ही टिकट दिया था, यहां भाजपा को जीत मिली।

गौरतलब है कि विधानसभा में एसटी के लिए आरक्षित 47 सीटों में भी भाजपा को 24, कांग्रेस को 22 और एक पर अन्य को विजय मिली थी। मालवांचल में जय युवा आदिवासी शक्ति संगठन (जयस) की उपस्थिति को भाजपा की राह में बाधा माना जा रहा था, लेकिन जयस के प्रभाव को इस लोकसभा चुनाव में भाजपा ने समाप्त कर दिया।

खरगोन में भाजपा ने सुधारा रिकॉर्ड

आदिवासी संसदीय क्षेत्र खरगोन में 8 विधानसभा क्षेत्र आते हैं। इनमें से 5 सीटें अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित हैं। विधानसभा चुनाव में यहां से कांग्रेस को एसटी की चार और भाजपा को एक सीट पर विजय मिली। इसी तरह एक अनुसूचित जाति की सीट भाजपा और अनारक्षित दो सीटों में एक-एक भाजपा कांग्रेस को मिली थी यानी आठ में से कांग्रेस के पास पांच और भाजपा के पास तीन सीटें थीं, इसके बावजूद लोकसभा चुनाव में भाजपा ने परिणाम को बदलने में सफलता हासिल कर ली। धार लोकसभा सीट मालवांचल में ही धार भी आदिवासी बहुल सीट है। विधानसभा चुनाव में यहां पांच एसटी की सीटों में से कांग्रेस को चार और भाजपा को एक सीट मिली थी। अन्य तीन अनारक्षित सीटों में से एक कांग्रेस और दो भाजपा के पास थीं। भाजपा ने यहां सांसद छतर सिंह दरबार का टिकट काटकर पूर्व सांसद सावित्री सिंह को प्रत्याशी बनाया था। रतलाम-झाबुआ लोकसभा सीट सबसे दिलचस्प मुकाबला रतलाम-झाबुआ सीट पर माना जा रहा था। यहां की आठ में से सात विधानसभा सीटें आदिवासी वर्ग के लिए आरक्षित हैं। इनमें से भाजपा और कांग्रेस के पास तीन-तीन सीटें हैं।

एक अन्य सीट भारत आदिवासी पार्टी के पास है। अनारक्षित सीट मिलाकर भाजपा ने यहां चार विस सीटें जीती थीं। यहां से भाजपा ने कांतिलाल भूरिया की टक्कर में गुमान सिंह डामोर का टिकट काटकर अनीता चौहान को उतारकर नारी शक्ति के भरोसे नैया पार लगाने की रणनीति बनाई, जो सफल रही।

मंडला में फग्गन सिंह कुलस्ते भी जीते मंडला लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी रहे फग्गन सिंह कुलस्ते के खिलाफ क्षेत्र में नाराजगी थी। इसके बावजूद वह कांग्रेस के ओंकार सिंह मरकाम को हराने में सफल रहे। इस आदिवासी सीट से कुलस्ते पहले छह बर सांसद रह चुके हैं। इधर, शहडोल में हिमाद्री सिंह भाजपा का गढ़ रही है। बैतूल सीट पर भी कड़ा मुकाबला था लेकिन भाजपा ने कब्जा बरकरार रखा।